

न्द्रज कर्मी के महत खरूर हैं जो सब देवताओं के देवता है और जो समस्त संसार के अविनासी में ता है। सब अमेरी से इसम इसी धर्म के हिन्दू पर्म करते हैं। सभ आर्टियों का हिन बाहते हुए धर्म की इसा और अचार करना हमास धर्म है। इसि ग्रुमम्।।

पुलक के सम्बन्ध में

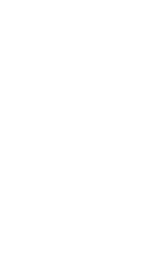
यह पुम्बह स्वयं इस शिक्षा योजना की भृभिका मात्र है। मह-मूनि से हालवें इस मूनि से हैं वहां एक एं€ गाँवके भीते तीन वीन बादनी से लेकर एक एक बादनी देंसी मूचि है। पानी वहां बलान गर्य चाँर चिवक तर सारी ही है। रहीते टीले दर्स पहाड़ों का साहरद और शतुमन बताते हों , उसके मार माप वह समतत मूनि भी समस्ती पाहिर उहीं सेवी कम और पास अधिक होती है। यहाँ टीवीं की दलानी और मैहाती में हजारों गायें ,डडों के ठोते. मेड़ों एवं बकरियों के सर के मुंड होने पर भी खाती ही दिखाई हैं। जिस भूमि के द्रत्येक गाँवों की शान्ति की शतशा मपूर ध्वीले-प्रति कुल भंग करती रहता हो। इहाँ मुन्नों के मुंह के मह अचानक अपनी नारिका के तीला का में पायेच की चिंकते और जाक्यत काते हों। ' बहु सेवन धामन, वृर गठानिया बेकरिया-क्रानि विविध 'जात के बाम और इसे सब के सात करने बात सुरह उसमें चनने बाते परिक हो चल चल में हुमान हों गोकता हो। त यहां नरु-मूर्य का स्वरूप तकरा है। बड़ा के प्रयुक्त साव इसो पाम तथा दूसरी दनस्पतियां के महारे जीवन रहते ही ु 'र्जार वेसे हो बहाँ का मनुष्य वर इन रशुको पर ध्रपना जीवन

ु निभर करता हो, इस भूमि के मनुष्य वर्ग के 'शक्ति बना



٠,

(निवास) में रातों में उतरा बरावर कालमए बना रहता था. टब कि मार्चे के पार्ते कीन संदेशि पड़ का संबा पेरा रहता या। उन हिंसड बीरों के दिन में भी इर्गत होने रहने थे। में चीर मेरा मार्पा एक मात्र उसके काकमत से बचाने के लिए हो गायों के गवाते बन के डाते थे। छानु ! यह क्या सम्बी हैं। पढ़ने की नहीं, फलुभद की हैं। दिन भर गादी के खाते दन के बदरीत करना. रात को बड़े वृहों को कदाओं का सुरता और नोना पहाँ इस ममय का सबसे बड़ा संसार था। बाद में मंसार में बहुत हुन्न देखा दिखाया. यर मब हुन्न भूत गया। परन्तु वे दिन बदाबिन् इस्स इस्सान्दर में भी न भूने, रेसे प्रत्यह प्रदिन है। भाष का ऐसा सेंका काया कि सुर्वे पते की करह १९६१ में फ़ाइन्स (पंडाद) में पंच उमें । साधारए शिला और मर्पुरुषे का मंतर्ग हो पा हो. उनके मंतर्षे से १९१० में बहाँ देन दलकानय की स्थापन हुई हो बाहा कर एक बाहर्य पुन्नकार्य बहुद नदन है। जिन बाबन में यह पुन्नकाल्य हैं, वहां मेर एक स्थम है। जो मुक्त खिलमार में प्राप्त हुआ य इसके बाद समय साधारत एवं राजनीतिक उत्तमानी के मा ११ माहस्य महत्र पहारत हा मोत्र महत्र १८३ विभे ह मां इस परता इस **द्या**या । स्था साहस्य सहस्र हे त*े से* स भन्दार र इस्ति पर रहा था। इस्ताम राष्ट्रे द्वाहात स : ###### #### #### ******### ******## . इत्या मिश्रा के एसके हार मेर दाख्य नरदर समस् सार में राज्या जान् माज्या के स्था बनार न मेर ावर हवारा 'उन परंड्या) मावतपुर राख्य, रेडना रिमार कर राज्य हा इस्मा के हात्री से ऐसा कर दिया के में जनका मनस्य रोगोल्यानदी से पूरा र जनकरर बन गया। नर-न म ह हाबों में ही मैंने बीही बार पैर्त चक्का बाद



कि जिस पर खाल पट्टी-यही शिक्त्यों की खोंखें कीर वाजी लग चुभी हैं, तब शागड़ में तो एक सात्र पानी की की कमी है। यदि मरूपूनि में पानी हो तो बना बनाया स्वर्ग है।

में श्रव आपको उसी दागड़ में ले चलना चाहता है-जहां खतानान्धकार ने स्वर्ग को नई बना रक्ता है। देखिये, बागड़ जाने का रास्ता भीरे-धारे केंसे बनता जाता है। गतवर्ष ४ सितम्बर को माननीय स्व० चीपरी छोट्राम जी की अध्यक्ता में उत्सव हो रहा था। उस समग और-और लोगों के साथ चार व्यक्तियों ने २ हजार रूपमा इसलिए दिया था कि इसके द्वारा मह्मूनि में अत्तर प्रसार का कार्य आरम्भ किया जावे। उम रुपये के साथ विद्यालय कमेटी ने दो हजार और मिलाया श्रीर इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए एक कवि को नियक्त किया जिसका काम यह था कि वह मरु भूमि के गाँवों में धूम-पूम कर बतावे कि किन-किन गाँवों में मांग है, कि जिसके जन्तार उनमें पाठशालायें खोली जाएँ। उन्होंने भ्रमण करके बदाया कि अनेक गाँव चाहते हैं कि इनके बालक शिला पायें। परन्तु उनमें यह शक्ति और युद्धि नहीं है कि अपना संगठित रूप हना कर स्वयं प्रयन्ध कर मकें। लीगों के भाव जानने के लिए में स्वयं रावक्षसर और मुकाम के मेलों पर दन लोगों से गिला। जनता के भावों को देखते हुए बहुत शीघ्र बहुत से गौवों में पाठशालायें चाहिए। मुक्ते ज्ञान था कि रतनगढ़ निवासी क्जरुटा प्रवासी भीमान् सेठ स्रजमल, नागरमल का भीमान् विड्ला पन्धुओं की तरह माम पाटशालाओं का आयोजन प्रराम्भ है। मैं स्वयं कलकत्ता जाकर उनसे मिला। उन्होंने दस पाठशालाओं का विवरण मांगा और गत २४-६-४४ को उनके कार्य कर्ता यहाँ के कार्य को सम्तीप अनक पा उन पाठ-शानाओं के मर्च की श्वीकृति दे गये जी क्षम तक लुल्



सामःजिक स्तर

यों तो मारे ही भारतवर्ष क निवाशिमों का म्यामाश्चिकनमर बाको तिर गमा है लेकिन महागूमि के निवानियाँ की दसा थायना द्यनीय है। इसका कारण शिक्षा की कार्ति, रुक्ति की युनामी, प्याधिक बजी शीर स्वास्त्य का निस्तर इस है। वाज के युग में रुक्तियों के बन्दानी की लोड़ना बोट बन्के नियमी का प्रयतन तमाज नुपार के कार्य के जाने हैं।

संस्कार मार्चान भारत के नेतायां । (ऋषियों) ने मनुष्य की ऊँची न्दर्गी बनाने के लिये संस्वारों की प्रासाली हाली भी। रिपमा सभ्यता से प्रभावित लोग भते ही संस्कारों के महत्व हो तममें लेकिन इसमें मन्देए नहीं कि संस्कारों ने व्यक्तिशः य जीवन को घहुन ऊँचा बढाया था। हिन्दुक्षों में न्यूनाधिक में यह संस्कार धान भी प्रचलित हैं किन्तु सिर्फ रुद्धि के पर मार में रुदिया इतनी दूषित धीर विद्वत रूप में हमारे हैं जिससे पिट छुटाना मुस्किल हो रहा है। वि प्रत्वेक माकार विराहरी भीत का साधन कन गया है। ह लहका पैटा हो लोग दस्टन को पात करते हैं। नाम लियं नहीं आपितु खाने के त्रिये कोई मर जाद्यो सकार चार गाला लक्षहियां से पर हो, चाह लाश नना छाइ हा लॉकन मृत्यू भीन जरूर हरो। स्वाह हो, गमा हा काइ पटा हा लाखा हम जिमाधा यह ा आवाज हाती है। धार कोई सतक भोज न करे रा में निकाला जाता है। मारने पीटने की धमकी



मवेशियों से इन्हें पाम लेता पहला है। बयों कि पैसे के प्रभाव में न यह फरोड़ मकान पता सकते हैं और न क्ष्मोद पर उस्त सकते हैं। करहा राजा पपहा न मिलने से इनकी पाम फरने की शक्ति का हान हो जाता है स्वाध्य निर जाता है जीर पर है परा पाम में न होने से यह पर्स्द्वी रोती थाई। भी नहीं पर सबसे हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि इस्ट्रिजा और सन्दर्भी इनके यहा देश दाल देती हैं और जिस्सा नित्य दर्से जलाया पर्भी है। गरीब का एनियों में कोई मान नहीं करना। हर समय इन्हें हमसे हारा तिराहन होना पड़ता है।

यदि मर भूमि के लोग नाश फारी भीज कौर तुकतों को होए है कीर अपने पैमों को किसी व्यापार व्यवसाय में लगावें रुधा खेनों की वस्ति पर रार्च करें नथारहने के मकानों को मुन्दर हंग से बनवावें तो इनका जोवन सुत्यी और आनन्द्रमधी वन मकना है और इसी नायें को कुछ नालाव बनवाने में लगावें तो गायों की समित हो सकती है जिससे कई पीटियों के लिये इनहें और इनकी लन्दान को सुख प्राप्त हो सकता है। क्यापार हो सकता है। क्यापार हो मकता है। क्यापार हो नावें विशेषिक शास्त्र में कहा है—"यनो 5 स्मुद्र नि अयस मिटि: सधर्म:। अधीन शेयपहर धर्म (बर्तव्य) वही है जिससे पानुद्र (सुद्र और समृद्र) प्राप्त हो।

हम नवह धर्म के पन्न पाती हैं। कुछां घनपाने, तालाव म्बरवाने थॉम शिधा दिलाने के लिये जो धन खर्च किया जाता है बह नकर धर्म है क्यांकि कुछ के खुरवाने से हमें पानी सिलता है। तालाबा के बनने से हमारे पशु मृत्य पाते हैं और शाला में हमारा जायन उत्ता होता है। उत्तार वर्म बह जिसके बार में बृह भ' पता नहीं बल्कि उसे करने से हमें क्यांकी और याननाथ्या का समना करना पड़ता है। हम बाप की स्वयं पहुंचाने के लिये नुकता करने हैं लेकिन बाप स्वयं पहुंचता है



एक लाग गाठ हजार राया भी संगरिया के चेजारी (कारीगरी) सतद्रीं और दिमानों के पान रहता जिमसे उनकी आर्थिक रियात उँची होती। यह हमने सिफ उदाहरण के सीर पर कहा बरना अफेले नंगरिया ने विद्युत बार साल में नुकता भीजी (मृतक शोज । पर चार लाग-प्रति वर्ष इस हजार की खोसत से धर्म दिया होगा।

'ब्द-ब्द से घट भरे, टपक रीता होय' के आधिक सिद्धान के महरेन के। धनर मरु भूमि के निवासी समसलें तो वे धवरन ही इन नाराकारी प्रधायों को खोड़ कर खपने बन्दाल के लिये कटि यद हो जावेंगे। कुप्रधाची ने हमारे समाज में चौर भी अर्वेको चुराइयां पैदा की है। अनमेल विवाह इसका दुष्प-रिलाम है। कर्ने से द्वे हुए लोग ज्यादा से आदा रक्त द्यामन करने के लिये अपनी क्न्याओं को बुद्दे लागों के तने मद देते हैं।इस पत्या विकय और अतमेल विवाह ने विध-बाक्षों की संद्या की बढ़ावा है। नमाज के चरित्र और स्वात्स्य की निराया है। पाप की इद की है और धर्म का ताम हचा है। धारतव में धन मेल विवाह हमारी हृश्य हीनता का निरुष्टतम उदाहरण है। इस मुजया के कारण राज्य समाज के सामने हम व्यपना सिर ऊँचा नहीं कर सबते है और बाल विश्ववार्थी तथा अवीध बन्याची के अभिशाप से उतारा नमाग हम्य हो रहा है।

एक बाांसची की चिद्र उन्नत होना है और इस मारकीय गोवन को स्वर्गिक शीटन बनाना है तो उन्हें अपने सरकारों को ठाक दम से मनाने की फोर नुइना थाहिय । श्रीर इन नारावारी फिजुल व्यवियों की एक इस कर करदेना चाहिये। और इसमें मा पैसा बचे उसे श्रपनं भतान अपने घर श्रपने पम और श्रपने

शाबा के मुधार में लगाना काहिये ।



हन इहा जाता है। उपवसापी लोगों के लिए अवस्य यह लड़मी ा का दिन है, तिकिन सब नाधारण के लिए समाई का दिन ्री बर्चा के हिनों में मक्ती, मच्चर मकड़ी आदि से परों में

न्द्रती हैं। जाती है इसे दूर करने के लिए इस दिन घर का एक ्क कोना नार करके पेना बावा था। इस त्योहार पर सफ़्ट्रे चीन भी होती है लेटिन पूर्णवरा नहीं।

नगरमा को प्रोहरूर उत्ताह और आमोह पूर्ण बीवन भारत्म वस्ते के दिए बनविस्तव ननाचा जाना राज जावन िक्सी को त्याम करने के लिए तथा नमान में संगठन कार भेम त्रत के लिए होती है परन्तु आत हम भूल गा है। इन त्यों एसँ के बारतिक नहार को यहि कव भी हम उसके उद्देश

नेनाः वः नवं प्रम हुन्य निरोत्ती काया है। नर्ज्यान का वादु शुस्क होने से रोग नासक है लेकिन यहा के तोनों की मना चार कालम्य के बारक उसम जरबादु के होने हुए भी मर वृत्ति के हो सुराय होता है। महत्यां क्षीर मन्तियां क्षीर कों के बन्ते हैं सामा और दोन हैंग में उपने के उन्ने

कर्मा क्या पहल हैं। बेहर असमे कार त्राच्या प्राप्त क्षेत्र प्रश्न है । है । वसके प्राप्त इ.स.चे वे क्षेत्र के सम्बद्ध के हैं । वसके प्राप्त इ.स.चे वे क्षेत्र के सम्बद्ध है । वसके प्राप्त इ.स.चे वे क्षेत्र के सम्बद्ध है । वसके प्राप्त के स्व



अच्छी न्युपर बच्चों को न मिलने से हमारी नसल राव हन कमजोर चिड़ चिड़ी और रोगी होनी जा नहीं है। यह हम की बात है।

यूरोप के लोग श्वस्थ रहने के महत्व को रहत समस्ते हैं। इसके लिए वे निस बातों पर ध्यान देने हैं।:—

- (१) समय पर जगना और समय पर सीना।
- (२) ताजा शुट भीर शक्ति वर्द्द भोजन।
- (३) नाजे जल श्रीर ताजे मकदन का सेवन।
- (४) वरूर धवस्था में शादी।
- (४) जितना साना इतना परिधम करना ।
- (६) आनोह-प्रमोद के समय आनोद प्रमोद काम के स्मय काम (
- (४) शरीर वस फीर निवास स्थान को साफ रखना । वेद में कहा गया है कि लस्की जालु प्राप्त करें। जीर वस नक्षी जालु प्राप्त करें। जीर वस नक्षी जालु में सी वर्ष नक इस प्रकार जियों कि मुस्तारे मुनने के शक्ति देखने की शक्ति जीर पत्ति के स्थान की शक्ति की शक्ति की शक्ति की साफ निवास नक्षी पाने अधिक क्या इस नक्ष्त को लक्ष्में कालु कालरे की सुकुक विद्या की सीए की शक्त की अध्यक्ष रह सकती हैं, कर्याप की इस नक्ष्म की साम निवास की सीए की प्रकार समझ कि सीए की प्रकार समझ कि सीए की सीए क

्रमीत स्थान (मुश्के पर करते हैं तक है, के नदार देश के प्रश्नेत्र से स्थानी स्थान होते समुद्रित पद्यारत (संप्राप्त के तक में कार करता होते । सम्बद्ध पुष्टाम को प्रतास कर के तम्मद्रिक । प्राप्त करता होता । प्रमुद्ध के स्थान की एए स्थान करते ।



माही पहेला कि वहीं दन हो। हमा होनार मा पड़ें। क्रॉप मर्पी से हमातमी बच सकेंगे। वहा हमा व्यवित काहार का 'मकेंगे। क्रॉप व्यवित विहास के काही बमावारेंगे!

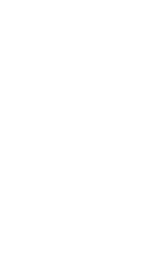
चह बाद नहीं कि चेला होगा नहीं । कबाद होगा । क्यों कि गए में कोई बाद करम्बद नहीं हैं "हबीद साहब ने ही क महा है कि" दिन मोदा दिन पहर्यों चहरे पानी पैठ ।" सो बाद के पूरा करने के दिखें मधी तम्या पनका संकार दें कहुद परिष्टम होना चाहिये।

्रमाठ पर निरिक्त विरवास है कि कीमर मीटरों ने बन्द रहे. हुरीटियों के होएने, सच्छी कीर सम्बद्धा को कपनमें रिस्टासप दावन कप पहार्य भग होने कीर ट्युस्ट रहने 'काट की नन मूनि काले पवास वर्कों में ही मानवा बन 'केरो'!

====

क्षेत्रके निवनियों वे वहाँ नहीं सहत नीते का भी इन्तित निवस्त हैं। दिनते सब्दे सतता, हात और वन स्थी नी कों हैं हुई हैं। इस्तर के बारे में दिनी की एक्ट हैं—

"फिडासों में तो इसे दिन न उसरे दिन्हानी में । इतारों का नये इस बोटडों के बन्दू पानी में ! म का काहि किन्दी चोड़ात के होंबाने । का काहिरा बुहारे में तो के देश में काही में या दाव का पाटा मैंड का कड़वा पाटा है ! दिना है तह करकार में हुती है जार पानी में !



निगरिट और वीड्रो के रूप में सेवन की जारी है। जिसे के आजह न की सम्यान समस्ति हैं। तुम लोग नी बचान से इसके अभ्यामी नहीं होने न उन्हें यह अपनी लगाती हैं, परन्तु अपने दक्ष लोगों की देगा देगी इस ज्यान को लगाती हैं। एम्ल् अपने दक्ष लोगों की देगा देगी इस ज्यान को लगा तेने हैं। विश्वीत और हुआ में से इसके अने उत्तर राष्ट्र हैं। सप्यम गेमी के लोगों में से एक बड़ा भाग इसे श्रीत और स्थान की स्वीत समस्त्र अपनाये हुए हैं। उनका चहना हैं कि अनिध्यों की प्रथम आवस्तात हुगी से इते हैं। इस रहें गरीव वे इसे विश्वास का सावन सानते हैं। उनका चहना है कि इसी ये वहाने बीच-बीच में मुनता लेते हैं लेकिन कोई किसी भी इपिट से क्यों न पीये और पीने का जीवित्य हुआ ही क्यों न जाहित हुए सामित यह (तनवाह)। शामीरिक नालांसक और आधिर सभी पहलुओं से हानिकारक है। बासव में यह एक विश्व हैं। जो बासवार सुद्धि अन और दर्म सभी प्रमुख नारा वरता है।

हम तन्यान् सा, पी और मंध्या ती पाप बसते ही है

लेक्सि इसरा बीता भी पाप है। क्योंकि जितनी भूमि में हम इस विष की पीते हैं उननी

में भगर पन शहर सेवडी और कन योत्रे में हजारों महुत्यों और पशुओं का उपनार हो। इसका सर्वे भी तो साथारण नहीं है ज्यों कि इसकी रायम इनमें होती है जि जीतवर्ग लागों 'बीचे इसमी देवी होडी है तब भी पूरी नहीं पड़ती और विदेशों में मंगानी पड़ती है माड बन ती १४-३० का माधागत मनदूर और मुल्डिम भी अंगार कन ती १४-३० का माधागत मनदूर और मुल्डिम भी अंगार के बीड़ी समारेट व नवाम पी जाना है कार बहु इन रायों की पा दूर योगे अ खने और में इमार दिनामा सन्छ। स्वाप्त बन डाये उपनात से अंगार सिंगों है से से साइन



। लेकिन पेय पदार्थो 📑 इसे यूरोपियन लोगों की संगति से रत में स्थान मिला है। पहले अंग्रेज न्यापारियों श्रीर केयों के साथ काम करने वाले घावू लोग इसका सेवन करते । तेकिन आजकत यह शहरी मजदूरों का तो नित निमित्तिक वन गया है और अब यह देहातों में भी काफी तेजी से तर पाती जा रही है। गांजा,भांग,श्रार चरस श्रवधृतों (:) की ा से यह पहले से ही प्रचलित हैं। इस तरह बहुत ही कम आमîो रखने बाला भारत वासी इन टुर्व्यसनों में अपनी **आम**दनी एक वड़ा भाग फ़ुं ककर शरीर की चलिष्ट बनानेवाले. दूध र मक्तन आदि पदार्थों से कतई वंचित रहता जारहा है, रियही कारण है कि जरा भी लिखा पड़ी करने से वायुष्टी मिरदर्द होने लगता है और मजदूरों की टांगे लड़खड़ाने ंगती हैं। भरी जवानी में पिचके हुए गाल तेजहीन आंखें पने देशवासियों को देखकर किसे दुःखन होगा? लेकिन च्हा स्वास्थ अन्ही जुराक चाहता है और अन्ही जुराक ति सकती है बचत करने से। इसीतिये प्रत्येक सममन्द्रार कि का कर्तेब्व है कि भांग नन्यास् गांजा चरस शराब रि चाय सबका बहिष्कार करके और इन चीजों को अपने स में फटकने तक न हैं, खगर ऐसा हुआ जो होना ही चाहिए । हमारा राष्ट्र स्वन्थ स्त्रीर चलिल्ट राष्ट्र बन जःचना । वान्तव में ह कार्य न केवल अपने लिये किन्तु सन्ताना और मुल्क भर लिए कल्याण का मार्ग होगा और है' 'न अभागा होगा । श्रपनी सन्नानी और जुल्क वारा न करना हिना हो।



चतिए। मस्यूनि वे वो बवि और वो साम हैं जाना सर्वस महाद्वी विचे दल मेनी में वा बर देहता हुन्य देन मितः गोबान और रिम्बानि मन्त्रमाँ बविदाईं अस्य यहे बना बर नेमों को हुन्य हैं, उन्हेंदन तोर वही हैन्यर वे दुन्त कर लिए में भी मेने बार्स्स विराव कें। दिनमें हार को दुन्ती और विकास हुन्य की की यह वा बहें। इस में दुन्ती केंद्र को कारीनी हुन्यों कर्या बहें। इस में हुन्तिओं कार्य बाई और बन कर्यान के भी हैं दिन में हुन्तिओं कार्य बाई बाई बनावाई वा बेंद्रमें हुन्द्र बाई विक्तें केंद्री में बाई बनावाई वा बेंद्री हुन्द्री बाई विक्तें हों में बाई बने बानी के हुन्यकर हिए बाई विक्तें होंगी में स्मानन और विनिध्य बन्ती कारीन हैंगाई।

रह बर क्रांगा दिने के ब्रह्मेंग्रासकों में बैस्स्य स्वामी को तरम में भागता ब्रह्मों दिवस बनाया गया था। देशव स्वीम सके ये में रही क्रांगियों के मागता देस में है में बादे गये के 'सीम में भी मारी स्वामार्थ के में रूप में को 'मागदा का सामग्रीमा ब्रह्मां कुछ था इस में रूप मारा पर भी या 'बहा कार मारा युकी' बन्दा हुए के स्थापित महायका यो दूसने में को में एक बन जह में सु कारने महायदी कार कर को मूनि में महामा बनाव उद्योग, के तम्म में स्वाम्य भी दिनमें दर वर्ष में यान बगर एक के बहाँ के स्थानया की द्वान को गयी थी सीम

नममूने वे ममाहिव दोक्त में केलता जाने वे किए बहा वे आव्यवकाओं और नियोकों वे अनुसार उपनित मेनों के इसरेगों काने और नय मेने उपनित करने या वर्ष किला होता और दिन्यकों वे साथ आरम्भ किला क्यार इस्ता है एए को क्यार वे निये अमाहिक होता?

क्षण्डे स्वास्य क्षणे वर्षे को सामकों की इसमा रेका यदा दा





मर-भूमि सेवा-कार्व 30 ध्यान देना चाहिये, जहां कुन्नों का वानी पीने के लिये दुर्लम है, बहां जोहड़ों के पानों को कुड़े कर्डट और मन्दरी तथा पशुओं की गन्दगी से बचाना चाहिये और यथा संभव उवात कर पीना चाहिये। मवेशियों के पीने के जोड़ड अलग होते

धौर आदमियों के पीन के लिये अलग होने चाहिये। भरभूभि मे जिनना जेवर प्रचलित है उसे यदि करई गत्म कर दिया जाय तो बहुत ही खन्छ। हो बरना उसमें मुधार कासी होना चाहिये। गले में चादी या सोने की हरकी जंजीर हाथों में दो हो चार चार चूड़िया, कानों में बाली और पैरों में इलका मामुली जेबर यम इतने तक जेबरों की सीमा बंध जानी

चाहिये। श्रनाप शनाप जेवरों में जो गढाई बनवाई खर्च होती है वह व्यर्थ जाती है। हम चाहते हैं कि जीवन में मातगी और

यादिकरता चाली चाहिये स कि सरलीवन खोर खाहरकर । जिस तरह शराव, गाजा थार चरम से वर्वादी होती है इसी भानि जैवरों के शीक ने भी देहानियों की गरीबी की बदाया है। जो चीज आज हम १००) शी बनवाते हैं कल ही ब्यग्र उसे बाजार में बेचने ते जाये ना मुश्किल में ९०) हाथ

पड़ेंगें स्त्रीर स्त्रगर पाच वर्ष बाद ले ज ये ना १००) में ७०) हाथ पड़ेंगे। अत जितना भी हो सके जेवरों का रिवाज कर्म होना चाहिये। यातव में स्त्रियों का मधा जेव उनका अच्छा चलत और उत्तम मनान है। अन संतानों को योग्य बनाया जावे और व्यर्थ रियाजों को छोड़कर मध्य लांगी का जैमा जीवन बनाया जाये ।

धरों में बक्तील एवं अपराव्हों का बयोग

हमारे देश और विशेष कर गांधों में गालियो-अपशब्दों के प्रदारण का बहुत ही अधिक प्रचलन है। बात बात में मा

बहित न्यादि की गालियां निकात ६ का व्यवने व्यवस्थ एव जंगरी पन का परिचय होता हैते रहते हैं, पगु को भी हम उन्ही गालियों के द्वारा चलाते चीर शहते करते हैं। जिनके जबर उनका मुद्र भी प्रभाव नहीं है। यह नी एक मात्र शब्द के क्षत क्षि वदारत एवं लाडी प्रहार ही की मानना एवं सुनन। है। इस अपने शिग्रुओं को लाइ-पार पे ममय लुक-पद्मारा श्वादि प्राप्तान्ते या ही कदारण करते हैं। दालक में नक्षण बरने को बहुत ही सुन, होती हैं। धना जो २ काद व किया बह सुनता या देखता है. इसे ही घरने व इशास्त बरने का अभ्यामी हो जाता है। सहते हम सापन में हैं और उन मा-षरिनों भिनों या नाम से से गालियां निमातने हैं जो बेचारी अपने परों में पैठी है। क्लिनी नीपना व शपरता का यह हमारा चाम है। हम विरोधी पर ब्रोध में धाक्रमण नहीं करते शिन्तु उन्हीं दुरी गालियों से इस बसे चित्राने व नीचा दिलाने का प्रयत करते हैं। इस अपने सगै-सन्दरिययों को गर्न्श गालियों से मनत करते हैं और उसमें परस्वर मां-पद्दिन वियो का नाम काना है । गाली निरातना क्सभ्यता एवं जंगलीयन की निशानी है। सभ्य देशों में इसका नाम तक नहीं है। हमारे ये व्यवसाद हमारे भीतरी भावों को प्रकट कर रहे हैं कि हमारे सुदर शरीर में हमने नितने वरे विचार दया रक्ते हैं। डा भीतर होता है वहीं बाहर प्राता है। यही भय वरी गालिया अवस्तर यह इसार देश रहन सहन 'बर नते से हम अपने' भाना भाना सन्तान क सदब देते रतत है अ वर ध्यपन व्यवस्थान व अल्लाह्य काल वाल सर्वाहर है है। \$P\$ 医葡萄状体的 医水体管 医毒药的 计编码 러'역 Hings 151 161 4 44 14 3H 15 1 1 1 4 44 1. बस्या तक संगमन नहां है। बरण बहा स्वार्ध के सरका बाजा पूर



सेवा पर गांव यालों को सुखी और इष्ट-पुष्ट हो जाना चाहिचे । तीसरे देवता है गांव बालों के घडन्ंग पती हनुसान । इस

नीसरे देवता हैं गांव बालों के घडरंग घली हनुमान । इस उपामना का सीधा तारार्य है कि अपने को हनुमान जो की तरह मद्माचारी बनाकर अपनेशारीर को बाज जैना बनायें । इनकी उपासना में मुख्य तस्य यह है कि कोई भी हनुमान का उपामक मांस और शराब बाने और पीने की तो बात करा उनकी हाया नक पहले जरी हैना । और पाने बाल सहित हो जाता है जहीं

मास खार रारोप जान खार पान का ता पान करा हाजा नक पढ़ने नहीं देता। खोर उनको ज्याने वाला कुष्टि हो जाता है, यही तत्व इस उपामना में हिपा हुआ है। अपने परों में दो दो देई— (हनुमान जी के नाम छोड़ी हुई नाय) गायों के दूध दृशी

ते सता परिवार रूप्ट-पुष्ट और मस जैमा शरीर बना मफते हैं। भागह के लोगों को पहले की तरह प्रत्येक पर में देहें गाय होइनो चाहिए। और उनका दूध दही दोनों समय परिवार में लगाना चारिए। सच्चा गोपालक वहीं है जो हथ दही ने रूप्ट-

होड़नी चाहिए। धार उनका दूध दहा दाना समय पारवार म लगना चाहिए। मच्चा गाँपालक वही है जो दूध दही से हष्ट-पुष्ट हो गीब्बों का पालन बरना है। यगट (मरुजूमि) में जिसके यहां है- गाँपें हैं यटि यह धपने परिवार के लिये दो देई —गायें दूध देने वाली खीर होड़ हैं नो कोई कठिन बात नहीं है।



धन्छे हंग से वेतों का काम नहीं कर पाते। ऐसे ही धनेक कारकों से मर भूमि निवासी कष्ट से जीवन व्यतीत करते हैं। अब देखना वह है कि इम निवस्तर से उद्यत्तर को वैसे प्राप्त कर सकते हैं।

गर्गवा द्र करने के उपाय-शिकाः-

इन नीन वर्षों में हमें अपनी शक्ति पूरी लगानी है। सबसे पहला काम हमारा यह है कि कीन कीन मी आवादी है जो म्कूल खुलने के योग्य हैं। जिसमें पास की आवादी के बच्चे भी आवर म्कूल के अन्दर शिला श्राम कर सकें, जहां पानी और स्थानादि का मुभीता हो। इसके सम्बन्ध में विस्तार से आने लिया जावेगा।

शिन्पः--

इस प्रान्त में भेट्टे, यकारेयाँ खोर ऊँट बहुतायत से पाले जाते हैं। जिनको उन खीर जट से खचड़े-खचड़े परम, इरी, धोरे सोरियां इस्वाहि का शिलप धन्छी तरह चल सकता है। घार महीने की फसल का फार्य छोड़ कर इन लोगों के पास कोई काम नहीं होता। इस समय मय परिवार इस शिलप में लग फर धरनी आर्थिक स्थित सुधार खपने पाँचों पर खड़े हैं। सकते हैं। इसके माथ साथ स्थान २ पर मृत पशुओं का चमड़ा पनाने पा वाम इनके सीम जांच खादि से छड़ी, 'हतरियां चाहू. छुरी खाटि के दन्ने बमाने खीर बटन खादि के काम चल सकते हैं। इसी प्रकार सरेम आर्थिक काम पर भासानी से हो सकता है। नथा यह दरने पर जिनसोन खादि खन्य बसुए भी इस इलायं खीर इस्टा स्थानों में बन सकते हैं। इससे खान नाम की ते हम काम ही ते हम से प्रमान सिता हो। इसते हो। इसते हम से प्रमान सिता हो। इसते हो। सकते हैं।



आर्थिक स्वर नहीं आयोगे। इन कुएँ और तालायों के पानी की बड़ीलत उन गांव के जंगल का पाम भी चरा जायेगा। इसलिये व एगड़ के अधिक गांवों में हुएं तालावों केन रहने का सुक ात्मा है। बहुत से खालसे के गाँवों में भी इसी प्रकार भूग शर पी से जो पैसा वसून होता है, जैसे-बड़ोपन आदि । वह भी राज्य में जमा होता रहता है। जो कि गाँव वालों श्रीर राज्य कमचारियों के दौय से दन वालायों और दावों पर न लगन संव वाताव और दाव संटन वालावों और दावों पर न लगन इस विषय पर मार्किक की मिट्टी से भरती रहती हैं। श्रतः इम बियत पर गम्भीरता से निचार करना चाहिय। कि यह गुर्खा इस विषय पर गम्भारता स विश्वार १९९०। वाहरू । विश्व से सुलक्ष्म में गांववालों की मत पुत्रम भारता है। याद रता प्र प्रधानन स्वाप्ति । स्वर् लाम है तो अवस्य ही सुवारना चाहिय। रही वाहर मालों के पशुभां की समत्या। उनकी आपसे उनके लिये शहरा कुं, वालाव श्रीर जंगल सुरवित रहें। जिससे प्रत्पर पट्टेशारी श्रीर गांव वालों में संवर्ष पेड़ा न हो। बाहर वाले भी अपन निर्वित स्यान पर स्वयं लाम टठा कर पट्टेशर श्रीर राज्य की भी लाभ पहुँचाते रहें। ये द्वीटी द्वीटी समस्याएँ ऐसी हैं जो श्रातामां से मुतमाई जा सकती हैं। पृदेशर और उनके सने वाल राज्य और उनकी प्रजा होनों में स्थिर नेह के न्यन सहेंब के लिए बने रहें। श्रीर उन स्थानों के पशु न हुने और रात चौगुने पत्ने पुत्नेंगे। जिससे रोनों ही फ क्षपार लाभ होना रहेगा। स्वर्ण भूमि इन बागड़ की पानी नमन्त्रा पर समुचिन विचार करना हम सब का कर्चन्य है। खपना ?

र्मुमपति-जर्मा हर हो है। रावन मह पोनर) टिकान के का यह कापने गावों में प्रति वर्ष हो एक व कृति बनवा हैने हैं। जीवनार (जय पुर) के टाकुर



edito is man one of its moved in the control of the control of its and accordance of the control of the control

क्षों कार के खंक कि एक हैं का राज है जक किरायन कार्य कहा कारका ने हुंसे के हैं की छूंसे किरो के किरो कारकांक की हैं की राज में हैं

भाग द्वार परिचारी शिक्षा होना वास्त्री हैं दिस हैं सिंग है कि क्या देश हैंगा होता परिचार प्रदेश सिंग कि सार साम दिसे हमा है हैं सम्बद्धित हैं है कि उस है है



पदार्थ हाछ, दही, ख्रीर मक्खन हमारे जीवन के लिये ध्रमृत है। उनके खलग घलग गुण इस प्रकार हैं।

हुम्थ — मधुर, रसयुक्त, वात पित नार्राक, आयुक्त, मेथा, बीच्यं श्रीर रस की बढ़ाने वाला तथा श्रयस्था को ठीक रखने बाला रसायन है। इही—उप्पा बीर्य, श्रीन दीपक, चिकना भारी, विपाक से खहा, मल को बांधरे वाला, मृत्र छच्छ, जुकाम, विपम उचर, श्रीत सार श्रीर छशता में लाभ कारी श्रीर यल बीर्य को बढ़ाने बाला है।

पृत— स्वादिष्ट श्रीर रसायन, नेत्रों के लिए लाभकारी, श्रमिन बर्द्धक, शीन वीर्च, कांति, श्रोज, नेज, सीन्दर्य, वृद्धि श्रीर श्रायु को बढ़ाने वाला है।

हाह्य—टंडा, इलका, पित्त, धकाबट प्याम प्यादि को दूर फरके प्रतिन को बद्दाता है। भोजन के प्रत में हाह पीना प्रस्वन्त लाभ कारी है। इसके सिवा इसका मूत्र भी निहायत हितकारी है। इससे प्रतिकों रोग दूर होते हैं। जैसे-कर्णशृल प्रादि।

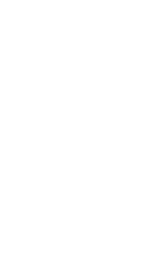
गोपालन की समस्या

गोपालन श्रीर गोचर भूमि का श्रकाट्य सम्बन्ध है। भारत वर्ष में गो पालन की जो विकट समस्या उपस्थित हो रही है उसके लिये यही मरुगृमि उप युक्त है। यहां के एक एक गांव के जंगल में हजागें गायें पल सकती हैं। मरुदेश के अमण समय ही मरुगृमि के जंगलों में जब श्रमिकों गायें की समय समय ही मरुगृमि के जंगलों में जब श्रमिकों गायें की समय-समय पर देखा कि एकएक घर के पास कई कई मी गाये हैं। जनकी वर्शलन उनके घरों में वी दूध की नहीं यहती है। उन्हीं के प्रताप से जिनके बेलों में जुले नीट सरे हैं। श्राप किसी भी



पड़नात करने पर मान्स हुआ कि जिन हिनों में पास होती है जन्हीं दिना में इनका रोती बाड़ी होती है और माय ही इन्हों महीनों गांवों का प्रत्येक बालक से पृष्ट वक मलेरिया मीसम की बुखार चौर नहारु आ रोग से अवस्य पीड़िन होते हैं। इन दोनों रोगों के कारण वे लोग समय समय पर अपनी वेदी को अधिक हुए से नहीं मन्भात सकते किए पास कार्टन श्रीर मंत्रह की तो बात ही कहां। अब देखना है कि दोनों षीमारियां लोगों को क्यों होती हैं। यहत जांच पड़ताल के बाद अनुभव हुआ कि ये लीग घी दूध की किसी भी दिन सिवाय वर्ष के दें। चार त्रोहारों के अलावा व्याह शादी या भरने फे के प्रयोग में नहीं लाते। इनके शरीर ऐसे यन गये हैं कि साधा-रल से रोग के धक्के को भी नहीं सह सकते। इनके नहा-रक्षा' क्षपाद से चल कर पोप माच तक इनका साथ देता है श्रीर दुलार भारों से चल कर समस्त शीतकाल साथ देता है। ऐसी अवस्था में ये थन तो कैसे प्राप्त कर सकते हैं। स्वीर यदि यो वेच कर बुद्ध इच्छा किया तो वह ब्याह शादी में लग गया और किसी परिवार में किसी की मृत्यु हो गई तो किसी केंट आहि पशु को देव कर या कई निकत्तवा कर पीछे श्रीसर (मृतक भीत) करते हैं। इन कारखों से इन लोगों की अवस्था सैकड़ों वर्षों से वैसी को वैसी पड़ी हुई है। बो कुन्नों या ताजाव अच्छी या बुरी अवस्था में हो गया तो गांव की हिम्मत नही कि वे उसे फिर से ठीक करा दें। किसी नये दुरड या तालाव का स्पन्न देखना ते दूर की बात है। यह तो कोई दबालु मेठ चाह किसी गांव में बनवा दे और उस बने बनवाये क हर-पर की भारतान भी लीग शायद ही करवा सके। इतने श्रम्थ । बर्बास रूढी और दुरीतची से इसरा पैस

लगता है कि । अससे न वे प्रपत्न रहत जावर घर बनव अवत



जकी गाय ब्यानी है उस दिन उसी गी के दूध में एक उर शक्कर मिलाकर पिलाते हैं। किर उसे कोई लुसक ही देते फिर भी उनकी गायें खुब मोटी साजी षद्या नस्त बाँर अधिक दूर देने वाली होनी हैं। इसका एक मात्र कारण नह है कि वे अपना सारा समय गौओं की सम्भात तथा देख नात में लगाते हैं। जिसके कारण उनकी गीएँ इतनी अच्छी एतत में हैं। और उन गीओं से निलने वाले घी, दूध से उनके तम्ये चीडे हील हील वाले तथा शक्ति-शाली शरीर है। जिनके हारण उनके नजरीक स्थान में भी कोई रोग हु तक नहीं तकता। न कोई नहारुत्रा श्रादि नाड़ी दुए देखने में आवा है। स्मेंकि वे उसकी दूध और हाह की बहीलत ही बलवान और एकिन्ताली हैं। जिसके कारण उनके मुकायिले में कोई रोग इहर नहीं सकता. दूनरी तरफ मरुभूमि के निवासी खान गाँव के लोग हैं जो अपने प्रारम्भ के महीने डेड़ महीने के इस बीस रपये के दूध के लालच में अपने यहाँड़ यहाँड़ियों को जीने और नरने की किसी भी अवस्था में रहने नहीं देते।

"घरनस्य हेती वहुँ हातु मिन्छन् "इस कहावत के अनुसार अपनी गायों वा दूध और कद तथा शारीरिक शक्ति को दिन पर दिन कम करते जा रहे हैं। जिसका परियाम यह है कि इनके इसी प्रनार से दूध और दूध से बने पदार्थ दिन पर दिन दुर्तभ हो रहे हैं। यही एक बावड़ की समस्या है जिसको मुझकाने की बहुत आवश्यकता है। मुझे दन आदिमयों और पशुओं की दशा को देख करके मालूम हुआ कि में अपने दूमरे जानों की डीड़ बर इनके मुनकाने में कुछ समय नगाई वह समय भी मैंने बहुत थोड़ा मोचा है—अमीकिए शिक्ष प्रमाप की इस बीड़ना के तीन साम प्रमाण कि गई हों



कारण शिक्षित सञ्जन इधर आना ही पसंद नहीं करते। चिद कोई भूला भटका इघर आ भी जाता है तो आर्थिक समस्या हल न होने, जल बायु तथा न्यवदारिक खाद्य सामग्री के अनु-कृल न होने के कारण अधिक समय तक टिक नहीं सकता। इसके शतिरिक्त आवागमन के मुलभ और मुविधा जनक साधन भी एक गाँव हो दूसरे गोव से जोड़ने के बहुत कम हैं। गर्मी में धूल उड़ने के कारण माग का पता नहीं लगता है। गाँव बहुत दूरी पर बसे हुए निलते हैं। प्यास और ल्ओं के भय से कोई पर देशी एक स्थान से इमरेस्थान पर जाने का साहस नहीं करता। यहाँ आबादी दूसरे प्रदेशों की अनेजा बहुत कम है, और चंकि वहाँ की प्रामीण जनता प्रायः अपने स्थान को होड़ कर अन्येत्र जाना खिथकतर पत्तन्द नहीं करती। इसलिये यहाँ के लोग कृप-मरहूक घने रहते हैं। कहाँ क्याहा रहा है ? इसका इनको दुछ ज्ञान नहीं होता है। इसलिये लोग प्रपने ही रीति रिवाजों को सर्वेश्व स्थान देते हैं। शिनित वर्ग से सम्बन्ध न होने के कारण ही ऐतिहासिक तथा राज नैतिक उथल पुथल में साधारण जन समृत् का सन्वन्ध नहीं रहा है और इसी कारण यहीं की जनता खन्य सभ्य देशों के खाचार व्यवहार शिलादीला एवं मुबार से धनभिज्ञ चलो छा रही है। यह सब छशिज्ञा का ही प्रताप है। यहाँ की वेष भूषा बहुत ही सादी है। प्रामीग् जनता लच्चा निवारणार्थ और धूप शीत से पचने के लिये इपड़े पहनती हैं। बल भी बहुत मोटे और सादे पहने जाते हैं। शरीर की तथा इपड़ों की सकाई का ध्यान वे कनई नहीं रखते फल स्वरूप कई विमारियों का भी इन्हें शिकार बनना पहला है। इन सब कारणों की जननी अधिका ही है। अतः यदि प्रामीस जनता को मुखी और सन्दत बनाना है, तो सर्व प्रथम इन की शिक्ता देने की आवश्यकता है। शिक्तित होने पर ये स्वयं अपने











रचनात्मक श्रायोजना

महसूनि में सेवा पाय का हमने संकल्प किया है। हम इसे हमारी योजना नानाजिल, आर्थिक जार शिला लन्दन्धी नभी दृष्टियों में जाति देवना पाइते हैं। किन्तु सभी उन्नतियों का मूल शिला है। यतः दनने मरमूनि शिक्षा प्रचार के लिए एक तीन वर्षीय योजना इनाई है। इस योजना के पूरा होने पर हमें विखान है कि मत्भूमि के नियासियों में दान होने की म्बतः पाह बढ़ जायगी, कार हमें भी हुए कथिक जमाद मान होगा, हन तीन वर्षी में म इन बहुरा में मा पाटसालाएँ जालने। जिनमें छन्तर व माचार-पत्र भली प्रकार पढ़ने और समक्ति लायक रिन्दी मा हा हान यहा के निवानियाँ हो हो जाय, नाय ही हिन्दी री पहां की बायरपकता को ट्रांक में रखकर गरित (हिमाइ-त्रव) रतिहान, मुगील, रारीस-विज्ञान, धर्म विज्ञान, द्वाप, हिन सम्बन्धी आवश्यक विषयों की जानहारी भी कराई रत पाठणालाको की शिला का बहुरच महमूमि बामियों के ही नवीमीय दक्षति करना है। बाह्यांनर फिला है में हो इस यहाँ लागू नहीं करना पारत । इनारों हिला म वहरेत वीरन में उत्साह, कर्म हस्ता, तथा स्वता है। उन्हें करके या बाद बनाना नहीं।

पोंडता को सुपार रूप में मंदालत करते के लिए हमें त पर केन्द्र स्थानत करती होती। वन केन्द्र में ही इसालको का निरीक्ट सर्व होता,



रचनात्मक श्रायोजना

हमारी योजना

मरभूमि में सेवा कार्य का इसने संकल्प किया है। इस उसे सामाजिक, आर्थिक और शिला सम्बन्धी सभी दृष्टियों से उन्नति देखना पाइते हैं। किन्तु सभी उन्नतियों का मृत शिला है। अतः इसने मरुभूमि शिला प्रचार के लिए एक तीन वर्षीय योजना पताई है। इस योजना के पूरा होने पर इमें विश्वास है कि मरुभूमि के निवासियों में उत्तत होने की न्वतः चाह बढ़ जायगी, और इमें भी कुछ अधिक उत्साह मात होगा, इन तीन वर्षों में इन पत्रे में से से पाठशालाएँ खोलेंगे। जिनमें पुतवहें व समायार पत्र भली प्रकार पढ़ने और सममने लायक हिन्दी भाषा का तान वहीं के निवासियों को हो जाय, साथ ही हिन्दी में ही वहीं की आवर्यकता को हास्ट में रखकर गणित (हिसाव-किया) इतिहास, भूगोल, शरीर-विज्ञान, धर्म विहान, हिप्त-कियान) इतिहास, भूगोल, शरीर-विज्ञान, धर्म विहान, हिप्त-कियान सम्बन्धी आवश्यक विषयों की जानकारी भी कराई वाली।

इन पाठशालाओं की शिका का करेश्य मरुमृति वासियों के जीवन की सर्वोद्वील क्षत्रति करना है। आधुनिर शिका के निद्धानों की हम यहां लागू नहीं करना चाहते। हमारी शिका भ चरम करेश्य जीवन में क्लाह, कार्य दक्ता, नया नयना सोने का है। उन्हें कहके या वाब्यनाना नहीं।

स्त पोजना की मुचार रूप से मंचालन करने वे लिए हमें एक स्थान पर फेरह स्थारना करना होगी। इस केरह से ही सभी पटरालाओं का निर्देशना वर्ष होगा। इस केरह के एक केन्द्र व्यवस्थायक होगा, उसको देख रेख मे उन नेन्स में व्यव-रियन कार्यालय के कार्तिरिक एक पुग्नकल्य . . . ।। जिसमें महसूसि निवासियों के उपयुक्त गोपानन कृषि स्वास्थ्य रण, उम्मेग एयं कला कीशन कार्यि विषयों पर सन्दर पुनामें का संगद्द रहेगा। शुन्नकल्य स्थायों होगा। जिन्ने सामी लास उस

मरु-भूमि सेवा-कार्य

25

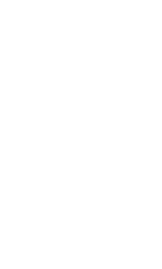
महोती। इसके खिनारिक इसारे फेन्द्र का विचार इस प्रदेश के रोती वारी, गीपालन, देवाल—सुधार खार्क खार्क है। हिन्दु दलका प्राप्तम देश के धर्मी माली महानुभाव च देशतियों की बगाना खार सहवोग पर निर्भर है। योग कर वार्ष कहारी करते हैं। हिन्दी भी जीवल प्रदेश कर करते करते हैं।

योग्य क्रम्यापकों की नियुक्ति इसी फेन्द्र से होगी। गाउसावर्गें किसी भी जीवल, सन्दिर, अरवा भागाला है सोहती जा सकेशी जात्री दूसको अभाव हागा पद्दासूनी हवा है स्टार्श प्रभाव पर स व बालों का चाउसाव्या का प्रकृत करना होगा। इन १०० पाउसालाओं का एक सम्य स्थानना करिन हैं।

इन १०० पाठ्यालाझा हा एक भाग खोलना कठिन हैं। कारण बनेमान समय से याग्य कश्यापको ना कभाव हैं। किन्तु हमाग यह यश्य होगा कि एक यथ के अपना हो सारी याद्याला सार खुन आय चुंड हम एक एम से यादशाला गीन वर्ष के

ह्मारा यह वयन हाता (क एक यप या अपन हा मारा पाठ्याः सार श्रृज जाय चाँर हम एक ग्रम में पाटशाला शीन वर्ष हैं रखना चाहने हैं इम'नर गंज वर्ष पाठशाला शुनने के बाद से ही तिने जायेंगे।





















पारमई नहीं है। साने-पोने के तिये तरह-तरह के साम और गांव सब्दी एवं पत्त नहीं हैं। पत्त-हुत से तदी वेलें और नरह-तरह को मुगन्यत फुलों वाले और-और पीपे इस नहीं है विष्टु-मर्प और यूसरे-र भयदूर प्राित्यों से बदम-रडम पर भव रहता है। उनके इलाज के साधन औपधि उपचार आदिका गांव वह नहीं है। मैले-कुपैले पैठी हुई हाती के मनुष्यों के पुत्ते हैं। व्याह दिखाई देते हैं। कोई प्रमन्न-पदन, मुग्गी, खास मान्य निर्मर उनमें नहीं। है यही नई का महेप में वर्णन हैं। हत दमाम दुग्लोंका और उम लम्बे बीड स्थान की

हत हमाम दुरगोंका और हम लम्बे चीड स्थान का देसने के बाद उसने दन सार लागा का दक्ष्मा दिया और दक्ष्म काने पर दन लागों से कहा कि यदि हम सब सितंबर प्रयन्न परें ते दिनने दुस्य दर्द चीर चठिनाइया हमारे सामने है वे सब बनारे सपने परीक्षम से बुद्र समय के बाद दूर हा सपनी है हर नेगों ने है। बासमी से नपना बीर में विरोध किया कि प्रकार है ही द्वार भेगाने के किये कि हम हमें बक्श बदी रन दें। हमें दर भोगते दें उच्दे हा ते यहाँ भेड़ा रचा है हब सिर सुन हैमें दिन महता है। ११ गर हो ने रता था पर निवार मेहा नहर १००० व दरा गाप सिकाहे उनमें स्वयंत्र १००० वर्षा निर्मात के माहन है है। जे के के किया के किया THE TERRET STATE OF THE STATE O पिंग्न केल्या 🛊 🔻 🔻 🔻 🔻 🔻 मुंदर्दे साथन है । यह है । १९ १ । १९ १ । में प्रदेशसाथक के उत्तर । १९ १ । १९ १ ।

न्द्रमे स्वेत न उद्योग र १००० व ४४ ०००० जन जुने हे हर्योह रता दल हर १००४ ००० ४ ०००



पन मल की साह पनने पर मारी जपडाज और शक्ति शाली पनगई दन-र जमीनों में पैहाबार पड़ी तो प्रत्येक खेत में विपाई की माँग होने लगी और वे किराये वा मृन्य पर चड़गई। इसी मगर पेशाव के लिए स्वच्छ परदे वाले पेशाव पर दना छिए गये और नीचे वहीं पेसाव जमा होकर आधारी से बाहर जाने नगा। और पह भी जिससे गांव बिलहुत स्वच्य रहने लगगया। पनों के लिए नहीं हुएँ कहीं वालाव कहीं कुरुट और नाले आदि सनवा दिए गये।

विनके पास स्तानागार बना दिए गए तैसे ही पास में सन्ध्या देवन आदि के भवन बना दिए गये। पान पता पूजों के वृद्ध लग दिए गए। जिससे नहाने धीने का पानी काम में छाने तमे। दूर-१ स्थानों से अच्छे वंदा वाली गड़में मंगाती गई। ह्य लेंग मेरी का काम, हुद बाग का काम लिया। गीकों के रुदने के तिन सुन्दर-२ हापार व त्यान बना दिए। गडने जिससे वैगर्नी या सर्वी से बच सकें। उनके पीन के लिए स्वन्य पानी का पुरुष कर दिया गया। इस प्रकार में लोग प्रका फल और रू हे सन्या होहर घरने शरीर की मुटीत और यतकान बनाते में समर्थ हो गये। अपने गोव से दये हुए अन्त फन छ घाँए घी को सुन्दर मानों के हारा छन्द स्थानों में पहुँपाने हने वहां उनकी कमी थी। पहाने के लिए मुन्तर-१ याग पनने हरें। रदं और रेशम वहाँ इपजाने लग रूपे। इनके हिए मुन्दर र भेड़ें पानी जाने तभी । इस तरह से यह बच्छ भी उनदा हुए हैमा। मरे प्रमुखों के चमड़े के लिए पमड़े रगई वे कररगर में मान दिए गरे। हाँहुमाँ नया भीगी आदि में वादम सहस् है मरेगन्दरी चारू दतरी सादि के दन्ते वर्णियो व्या विरोध किंग रहर के पत्तीनशु बादि दिन 🔻 📝 में। जो कि क्ष मरने के बाद क्सकी सैटड़ों -



्रान्टे । इसारे मार्थे का कुड़ा महीं में इसारर बाड बनजावे और ्ति हो। को शहर ही जाते हैं पर क्या प्रापे दंग से जावें कि मन करी दर्शन परने नक की न निलं । रेनीले इनाकों में प्रमेगहरा द्वारंच मोहमे पर उप पर बेटने पर बाद में र्भिते हार्रे वा मरनी है परती भूमि वाली पोलाही में फला क्ताच्य गहार महेदने में पटी बान हो सबता है हा इंच नीचे निय मन तरह के रूप में भूमि की बहुत ही उपयुक्त एवं उपजाक तं कार है करा ये बाम सभी लोगों को अपने चाहिए। ये नहीं हैं हैं में दूर महाय हो कमर पताने वाला है वही तब छादि हरी है का सामग्र हर मनुष्य की सममय ही में मृत्यु लीक र्की मेडल है। कुरार्च ही इन दुनिया में सब बामना पूर्व ्षात है, 'इंदोनिनों पुरंप निह हुँशित लक्ष्मीः। देवेन देवमिती र के पुरुष बद्दाला," वर्धानी निह बीर पुरुष तक्ष्मा को पाना है िया हैंगा ऐसा विचार बाबर बाते हैं। 'सारसे बसी न दन हो में नामी पा नियान है। कि दुस्तर न्यव मिलमा प्रथम शीनों को मनार में एवं दूर नहीं है। क्ला इंडरामार्थ, हे बार्च मंगार में उनाह भारी शकि स्याहे। हमाहि हमारे छपि सुनि एवं सालों का क्यन है े कि उत्पर्ध करा हम भी करने देश और उसके गावीं की कित प्रदेशकों में है जा सकते हैं आपने प्रतस्म की क्या की हिंग कि दिस प्रकार उसे दरह श्वहत नई में भेजा गया और वन्त्र घरने घरन्य रामार्ट् में दूसरे पुरान शालिसवों और इसी ि हैना बन्धा हो प्राप्त थे हैंने इतत अबस्था हो से गया रित्तृ में अप उस करह की अधाध पूरी हुई और वे लीग हर हमें नहें में होते छापे तो हरहे जा तह तहा प्रता छर्थात् चर नार्य बन चुडा था। इसी प्रकार तथा इस सरस्या की केल ही पुरुष बार खंडर में हा तक में मा आह बुरी

७४ मर भूमि सेवा-कार्य वीख रही है स्वर्ग बना सकते हैं। यह सब बुद्ध इमारे . श्रीर बुद्धि पर निर्भर है।

दान चीगों से कावोताः—
नत्य कामये राज्यं न मील्य ना पुतर्भराम् ।
कामदे दु:चतप्ताना प्राणीलामार्ति नारानम् ॥
सरु-भूमि से स्वर्गं बसाने की प्रवल कामना से प्रेरिव

बनाई हुई इस तीन वर्षीय चेत्रजा के सफल बनान केर सम्मी का कास है जो खपनी तेरू कमाई थी धिलयों का बरातम पूर्वक हैरोशति के कार्यों के लिख सनेट मोते रही रिवा तानका यह काद हम उन इलाफे से बार सन्दर्भ रहे. त्या सनका यह काद हम उन इलाफे से बार सन्दर्भ रहे. क्ष सनक और मुर्चारियत सागी याना यत के समात पां बसाव है। वर्ष क्यों उन्हों रुन्-हर, रू, १२, दो तो कर के भी बरात नहीं देते। इन्हों बहिनाइया, अपनिष्कु को दुर्माना और पत्तियों की निजनत क्या बजानना पत्ती के बनाव से यहाँ के हेल्ला अपने ही धीत के से बाला अत्या हो उन्हें है। सन्दर्भाम के नार्मा (सहसी) यहाँ के प्रतिव बानियों की पत्तुत इनारना में अनेक कर कहन कीर हाई रहन पत्त होई है। त्राक्त हन देशों ने •

त्या अक्षायान्यवार द्वारा द्वारा है।

क्षेत्री शिक्षा में क्या जहां। र , स्त्री स्थापत २। भी व महत्त्व मही है। देशमें की उत्तायाना के तो क्या हात देश हो रही है यह अक्षायारण है। क्षा क्या करण त्या त्यादी माम पैया होती है। जा शाद कर्यों ही इस्ता वय वर्त जाती है। इनसागा से इन्या की विवेद ना करण का सामना करने का उपका सम्मा उन्हों और उस में









सेंद्र शमाज सुधारक सेंट रामगोपाल जो मोहता चीकानेर निवासी का मरुभूमि

निवासियों को सन्देश

ति। हो दर हा तह साराही गायों में है । यहतार्थ की यह साकशी मंश्रीत मारान्या सब महात की कर त वा बाध्यत इसले वाब है। वध्याचे से चहित्रा, धन विश्वान, बुरीनिया, श्रीद्वत। और िवर गुरुष्मी बनी पटेनी तब तक की शहरी के मर में नवे उद्योग प्तरम्, सार्व देश चावदो चौर हेत थे दगा सुधारम की ५ सार्वे हे मुक्त की सम्ह कारण साम्राती हरे हैं। शबी के बार संबंधि भारत्विद्या विवहत संघम तीरपरपुद्ध संवमन रपानि इत्योज्याने के एक धर दत तुष् है जार धम दे सुख र्चित्र सन्दिष्ट सर्वोहाती हे शमता इस तन का इला करी होचे मॅर्किक स्टब्स एर पूर्व चित्रका, पुलस्थि कलाई सार्खी और स्वाजी है गुर्ट हे चेतुक है कम दर करता समय, शनि कौर धन गर का में है। यहां चीर शसी के सीकी पर रेमियत से बहुत महाचे कर महा के लिए बर्जरण को दहते हैं। सब के के विकाद रहाई की दोना । जिसके होता बहते हैं । उन की पुरु दूसरे से स देश बनशरे से बहुत अब कान हं ीर उड़रों के विकास से . विशेषात्र सम्बद्धाः स्थाप्त । इत्यापान प्रव विदेशियाचे सम्बद्धाः विश्व । १००० वर्षः वर्षे सम्बद्धाः भें इसाइ में कार्य हर है । १७ ला अस बन्द बरन

कृति पान ११ व है पान्तु । बार्जा व मान वाह मान के पा

दे सर-सूमि सेवा-कार्यं की बणवानार्यं की बणवानारी रिवान का नहीं बोधते । इस तरह की कृषियों करहे करेंद्र्रा बणवें हैं। जिह सेना देन और दिवान हैं के स्वकार के स्वान कर हैं न एक्सर कर कर कि के देन कर कर के स्वान के स्वान के स्वान के स्वान के स्वान के स्वान हैं के स्वान के स्वा

के बहरण चाननाईयों के चापाचारा स वापा रचा नहीं बर म सुध्यूर्वेवाजी में भी धन बरवाय हिमा जाता है हमडी हाए सन्दाना जगाना ही सुरिकत है। अब तक प्रामीस विसन विश्वामी, व्यविधित, ब्रवन दिनों के जिए बंदाश बीर वस्तर 6 में वह बहुँग लय लय देश के शहीर का ध्वम बड़ा भाग भहीत ह भीर पापया क सामाय में शतहात, चाराई।त सीर मुश्यावा दुवा रदेता । पृष्ठ प्रायं से द्विया बहुत स है के बहुत रही है। क्यारी युद्ध न इस नार्यक्षी की बाख का पाँच मा तम कारि जिनके वास चन चस चार्विक प्राप्ता सन बावन बीर सनि है बाबह माग चपन स्वावाँ क क्षिए सूब श्वत इ वर इवर चेन्द्राचे बर रहा दे वरम्यु गावा की अनुमा बापन बागन चीर विश्वाभी में बढ़ा हुई कवना रका के लिए इस भी कर नहीं सी खानी जिसे पूर विवास मा मुर्गेट के रही है वची हायत में हैं कात सतर सारवी रहा के जिए श्रुप स्पेत नहीं (व त उन्हें के व्यक्ति बरवादा कीर विजास का माजना कामा वदसा । सबों के सहेंची का चम विकट समय में मार बड़' मंदर





रेस है कि अल्दों से बन्दी होश में चाकर संगठित हो जीव चीर विवस्ताम, मिशिहा एवं पूरु के खिलाफ तिहाद दील दें, गावों के क्द के तीर समस्रतर गुरुवीं को सामाजिक हरोतियाँ और फिन्न र्वियों दा नामी निरान मिशने के लिये प्रतिज्ञा बद्ध क्षांकर गाँव गाँव प्रवार करने की जन्मन हैं। हमारी तरफ के गाँवों में रहने वाले मानों बर्तरह से कई ब्रातियों हैं खैदे-बाट, विसनोई शजदन वर्गरह र उनमें घरनी अधि के तुछ भलग चलग रीति रिमात्र भी है। मगर मिष्यो अवानम् स्रीम नारासारी कुरीतियौँ मादः सब जातियों में एक ही पर्दे कानी है कीर उनके अस्य से होने काली दरवाडी हा शिकाह भयः ममी राज्ञों में रहने वाली की धनना वहना है। मरने के बाद का या मृत मोब करते की खुद्रथा सबमें मौतूद है । बेडी छे रुपये या मेंने सेंबर देवने का रिवाज सद गावों में प्रचलित है। संप्री के सीओं रको हैन्दिन से रह एवं दर तेवर चढ़ाने की गुराई की सब संभा हिं हिंहैं। रादी में बढ़ी बढ़ी बढ़ातें दना बर ममधी के यहाँ फीओ हिंदरहात द्वाल कर उसे माली नीर पर बरबाद वर देने का पाप यः सभी कमा रहे हैं। धन को पानी की तरह बढ़ाने है किए जब तक दिहे दहे भाडे मुर्च रहेंगे तब तक दिल्लान कीने धाने हा सुशहात म महने ? बाद डांगों ही चाहिदें कि इन पुराह्यों और समाज के में को रोक्ने हे लिये चयने चयने गावों में कीर चयनी चयनी मानियों भी दर्ने देश्हों बरके चपनी अपनी आति के कुछ देवनाथों के नाम क्षम माक्त प्रतिज्ञा करता कि इस काथ से इन इम्प्राकों में बसेशा बिने क्यों करते हैं। इससे पहले इन प्रधाबों के अहिये हमने घरना भिरते भार्रयों का जो मुक्सान किया है उसके चिथे परवानाय करते भीर भाषाच्या इन पार्थी का बाख रहते कही पर भी नहीं बदन हेरी। भर वैती अह प्रमा को ना कबड़ी बन्द कर देना च हिये। साही के वा के मुख्य की तादाद कम में कम मुक्तर का देन' चंदिर का अमाना त दर दमकोर से कमबार दैक्षियत कमाई के जिस में नदी नदी

वर्षे । इयो तरह कालियों को तादाद और काल टारने की ... कम स कम कर देनी चादिये । अक्की बेच कर टार्व बेना सी बेचकर रुपये खेन से समान गूरीन कीर य.वहमें समझ करी रोक देना बेचन हैं।

सापरता चोर हिसाब हिताब की शिक्षा के साप बात दिव के का दा सक नाज से महाचता अग्र कर के वायुनिक वरीने के पत्ते की चंद्रा करनी चाहित , कुनितारों चोर किन्युक्त मों से करते हुँ। का गानों के मोता के हिन के दिन प्रसूच, अनत की कुने क्यां की होतें (जुनुतों) को जानानां कान से सामा जावित

सार हा यह ता तीव बाबा का स्वापन के तिन काई विस्त्री दीव भी ब-सारश्रेदिक शोध माजक का मायावन कारा वहीं की मारिये में दिलान स्वचन काराइन शहर स्वापन मिजी है वाले मारायों के हारा बच माठे त्या बहुने में सारश्यक कोई मोहर्स इस समा की सारायों का सारा मानी माना मार्ग में मारायों के हारा मारायों के सारा पूर्ण माद कर कुर्म मुख्यानार सार्शनों में दहारी की दिली हुं मुख्यों के पास्त्री माना सार्शनों में दहारी

याण कारों में उपवाद चीर उदना व हुन नी करें। इर्पनें जाना करता है कि सात्र मेरे निर्देशों का पान से बताब देशका मेरे मेरे पीर चरते नवील करता में दाना दारा हुन रहें जिसे बात कारों में कार-कारकांची के पारवस्ता है कार हैं। बार बाते करें चरता करता बातन करता जाने जा होते हैं। बारोज हैं।

काश्वी मधाई का मैं सक्ते हरूय से इन्द्र हैं।

रासगायन देवह







	मर-भूमि-मेवा-कार्य	
भगत किराया	14)	स सिक
मैनन क्राधाविका	₹₹)	e . *
धेनन नाडे	1+)	*
समान दृष्ट् अध्यक्षाल स्वय	14)	19
		m/48
£-4	42)	****
पक रहुक में ३ वर्श जीत ६ वर्श के बीच के बन । भावक मानी दिक ना करने हैं जिनमें २० खबड़े माध्य मेंची रे जिनम नाम भी जाय नाम तुम खबड़े नियम मां के जिनमें केत नाम होता माने में । मधी मा जाना सुग्र की सबये बन के इस बनार हा मानी हैं।		
	30 4146	ŧ
मवेश श्रुक		1
वाहत गुण्ड	** ,,	1
अस्त्र काम प्रत्य	1.	
य इ ची-स	** "	-
		1
पैन्ट क्ष्यय सामित्र स्थय क किए तथा १०) स्थल के सन		
Commence and Manager and at matter 27 27 17		
And at 1 and and a state of the		
SPECIE Made at LONGO AL MINISTER TO TO		
सब्दार्थ का कर्णक्र प्रायाची अध्यापारी भ		
man an assum as adv a w t and 9 at		

सहाजना नया चडानुन्तान का क्यों न हा । कर्न म न स स्थान क्षात्र की पट के क्या चडा पात करेरी में नके





किए है विद्वार होने साथे तथा १६० हम की नगर परिस्थि किस नहें क महत्रों भी राम में हे ही हिसमें बारों गांच भी। जे के वे वेदार तथा करतम तथिहर थी। सहयोग स्वाती के दूर

्रिक दिल्लाहें के से राज्याहिक सहयाताई की वदास्त्रों के सूत्रजी मित्र के तत महत्त्व हामा कार थी। बाल के के महित बागाएमी के में अस्ति है कुछ में दिन हथा छाउटिक है सुरमतह के सम हित हरते. बार्ट्स के से हे सामन्द्र भागना है। मन्त्रिकी दिया सथा हिन्दिन हिन्द दे एम् पार्टम २ इत्साराच थी। धारण्ड सारक मे

ही राज दे पान का धावह हत कर तर तर उनने द्रांसद द्रिः

हेर्वन्त्रों के समय में भी गायों को हुन करण हातन वहीं। सन् भारत है हिन्द यह चहनाइड न किन्छ। वा सारत था। वा सार्यु नहीं विकास मान्य हो स्थितमा व कारत वन ममद एक पैसा वर ्रिक्तिक का पुरु तबने का 1 मन भन मेर महत्त्वन (बक्ता था। हिंदा के बेड मेर कर्न में बैन द्वारों न तर क क्रिक्स है में ति के हिंदिन हो सुनवसात बाइसाई है समय ग्रीहरण विस्तृत हित्ति। जीवन के प्राथमात प्राथमात पुरुष कराया करता है हारवाहर में प्राप्त पुरुष कराया करता है स्थान क हा राज्य के विश्व के मार्थ की विश्व है। की बहुताई ने मार्थ की विश्व है। में के कि बाते हिंदा का शामिक प्रकात में सित कार्क महें पांचे नियम के प्रमुखन हुनका न्याय करें। शहर विशेष कर

रेल क्या के तरीन दिलहित बन् दे। राही की एक फार के कार्न हुए कामा हो हि, "अह वहा हरवा स सनाये हुये हैं। ने सिंद हुत मुंह के में हुन हुन सह में ग्रंप की जान चाहे कर हा हा हमान ब ने देन व लो है। इसे हि सहुत्य सब य संबन्धे पताब विव सेना किए ने हैं नहीं है। संबन सेनी

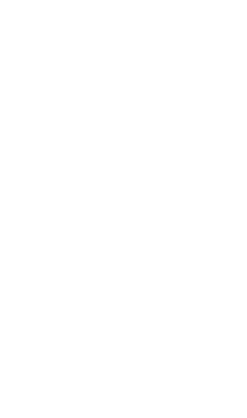
लाई सरक प्रवाह । इ. सहाव शीवाह में समझ बार रहा, प्रशिक्ता निकास । ता संस्ताह । सामा अस्मारक की साहे जात नहीं। असी है

गह नीम में सन्हार्य

द न हैं जा का, समाजारमात्र किसी की भी तस्ताप्त नहीं काना है कर १०६ जन्म मान्यस्क का व्यास वृष्ट्रास पूर्ण कुमार है। कर्रन में स्था के पिना इस बार नव न नवर गर्दे सजान्तर्यास

2 1

प्रोहेड सम्बद्धमा से हुन्या, स्थाप प्राप्त हुन्। पर एक्ट मेर्ड मुक्त दिस्स इपोडिड प्राप्त स्थाप प्राप्त स्थाप स्थ



मर-भूमि-सेवा-कार्य 90 इल चलाने से ही हो सबती है। श्रीर हवाँ का चलाना बैजी पर हो निर्भर है। इसमें स्पन्ट हवा कि सब संमार और अनुवर्गे तथा पशुकी के जीवन का चाचार यह गी जानि हो है। इसलिये इमारे माग्राध्य में गीहरवा को स्मार विद्यक्तच न रहे । भोडमदशाद चीर कदांगीर ने भी गौ इत्या बन्द करने के फामान निष्ठां । शाह चालम ने १३ जिहतहमा ३१ मोहना को फश्मान निकाना कि बाय और मैज बेशमार प्रापदा चौर काम रखने हैं, मन्त्र्य चौर वशकों का बोवन खब और चाम वारे पर निभर है बोर यह दोनों चे से कृषि के बिना सिख नहीं सकती, स्रोती गाय व वेज के दिना कदिन है। बच गाय व वेज पर संपार की क्रम सहया चीर मनुष्य का जीवन निर्भेत है । इस बान की ध्यान में रख-कर मेरे थाथ न बाग्र उप में गोदाया का दिवास विकृत न हो । चौर सर्वथा मिश दिया जावे । इन फामानी के पालन क मनून में प्रसिद्ध इतिहासकार मार विजयम इत्यार ने जिला है कि सुवतराज्य के २०० साल में भारत में गी वध नहीं हुआ। जिक विश्वेषद सिमिय जारत के प्राचीम इतिहास नामक पुरसह में जिल्लते हैं काववर ने कवन बढ़े साम्राज्य में भी वध करन वालों के निये प्रामात्वर की स्वत्रहण की थी।

पहले के बड़े २ व दश हो न हो नहीं 9 द वो सशो में हो मैगून क नवाय होतू सुबतान में बड़ी काशिश वरके बड़ों की प्रसिद्ध गायों की नमन कारून महत्त्व का कायम रक्ता संघा उसन किया। यह ठीक है कि कुछ मुपलमान कारताहाँ के समय गोहाया हाती रही, वर बहुत ही कम । धर की तरह कहती हुई क्याबादिक द्वापा ज थी, गायों की व्यापकता तथा चारताई के कारण मुयलमानों के समय में कुछ, यो की कांधकता रही, जिलक सबक्ष सुपितम राज्य काल के चन्तिम दिनों में भी १) रवये का ४५ सेर तथ सथा १) रवये में १०॥ मेर या मिलता था : इतिहास तथा हाशात से यह सिद्ध होता है कि सुसलमान बादशाही के समय बात की अवेदा गायों की हासत कई गुना अधिक तथा करदी थी। गाय हो क्यों, भामक पुस्तक से उद्दर्भ

गो पोलन की परम्पग

[से॰ थ्री रुकुर देश राज जो उर प्रधान भरतपुर राज मना]

भाषिक हिन्द्र से भी बहा ही उपयोगी जानवर है। प्रति प्राचीन बाद से यह देवारों कासी प्राटियों के श्रीवन निवाह का यह साथ साधन रहा है। गृतर, गोप (चहोर) भारत भी गुनी अर्थतयों है जिनके जीवना निर्दाह का चाजार शनेकी बची नव बेबब गाय हो रही है। यह इतना द्यपारी चौह द्रिय जानवह है हि- हुने द्यपि शजाची से खेवर बुटियों में रहने वाले और मर्दायागी ऋदि और दुनि भी दालने थे। महाराज हुधीयन के नी इष्टार गांदें थी । भगव'न कृष्य ने करने दिता बसुदेव को बच के कारागार से सुन कराने के बाद प्रदर्श जनम भूमि में गीसी की पृद्धि कराने लिय धरने इस के स में की पृत्र कान्येन्स पुलाई थी। कात यह स्थान कहाँ गाँधीं के वहाँन के खिये समारोह हका था ग्रात में, गौरद न तीथ, बहुदाना है। वरिष्य, बमर्फा, विस्वामिय धारि की गावें ज्यान मार में प्रसिद्ध है । इस सुना करते हैं कि घरती माना गांध के सींत दर दिशे हुई है। चलकार से यह बयन मार है। सारी दुनियां बात से जीती है चीर बाद पैदा करते हैं में माता ह बेटे बेच रविद बेल न हों सी बाद देश करना मुजिस्स हो आवे बीर सारी युनिया की बगाज हा हरव देवना वहें वैसे इस एक गाव को उसकी बिन्द्र्यों की रेन दर विचार करें ता भा यह का बन्त पायदें की चीत है । उद्दादक्त के तीर पर इस पक मध्यम दर्जे को राय का हिमाब करा से हैं। इदामा गुढ़ गांद ई क्षिमने धरमी ६२ दर्ब दो चालु में ६. वर्ष हुच हिदा, रमके हुच की चीलत रोशन। सन सेर रही ६ वर्ष से प्रमी दामठ सन अमहा हुए हुआ जिसकी शीमत यांच रचया मन के दिसाद से बाहमी हुय रचया हरे। उसने प्रवर्त दरहर बप की बायु में दुः बरखे दिये क्रिन्में तीन बहारे भौर तीन ब'द्या । तीन बरे बैस होने पर बाइयी रहवे के मीन बहिया गाय होने ९१ डेहमी रहवे की | हम मकार कुल रक्षम १० मी रहवे

मर-भूमि सेवा कार्य ৎং उसमे पैदा हुई। मर मूमि से अहाँ शाधी के चारे पर सर्च दरने धी भीवत कानी है बादयी स्वयं का धारा खगा लेने हैं-इस प्रश्र एक शाय कारना लाखंखेने के बाद एक इक्षारं रुपया इसे देती है, और इसी क्षीत में चक्र सूद्धि ∓यात्र की भौति उसकी बहिया भी गार्थ इंदर

ब्याने बराती है-वह मुनाका चल्रा है। इस ब्रहार कर गाय व्याने स्वामी का भौगतन एक सौ रूपया माज का सभा देती है। बागर कियान प्रींच माथे पालता है तो उमकी शंटा करने की जिम्मेवारी मार्वे चरने उत्तर में मेती हैं। यह स्पेती क्यारी लगा दूसरा धन्या करते वह अनाफें में है। सर भूमि यापों के पालन के लिये with भर में सबसे पायिक

दरवृत स्थान है, क्योंकि गी ---पालन में सबसे बड़ी दिवन चारामाही की बसी है, बीर मक भूम से चारागाही के बसी नहीं, भूमि की काकी श्चित्रता इम पदश में हैं । हो, इन कार ताडी की हस्तेमाल करने की कता भी सीधनी परेगो। सात कता हाता यह है कि-जितना सी ज्ञान इ.ता हे उनमे पशु हर समय चरते उद्भवे हैं । उसका गताना यह हाता है कि पास बदने नहीं पाता । दोना यह बाहिये कि गावी के

चाराताही का चार भागों म बांट विका जाये । बारी २ से पन्त्रह २ दिन का चन्तर देकर अनमें-मधेशी खादे आये । इसमें चारे की उत्तमना और यदि वायम रह सहेगी। बांगाच का कामाना वरण में यह शीति वहत अबुद्द देनों है। इस रीति का दम चारे का प्रचित उपयोग चौर चार की श्चितक्यविता एइसे हैं। तथा मितव्यविता सदा काम आने वाजी कीर लाजहारी प्रचानी है। इस यह कह सक्ते हैं कि - यदि सक भूमि का देहाती पशु पांचन भी हो इर्दा से जान जाये तो यह निश्चित है कि बिना दूधरा धन्धा

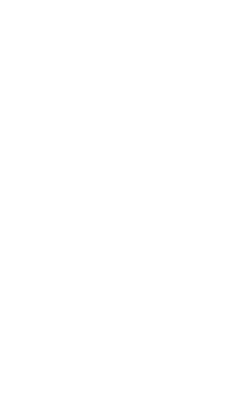
र्वक्रये भी भारता निर्दोह भवी भाति कर सकता है।

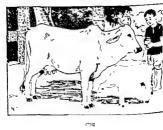
सहकार समितियाँ किसी देश में उद्योग घन्धे और स्ववसाय तथ तक फ. शृत नही कर भूमि ६ कियामा यह सहयोगी तरहान से हिरी कामी हुन हाय दूर रास्त करहत ता ने सात है की स्मृत्य के समाद का कर्य हर तक दूर पर सका है। देश की सुद्ध की देश साम पहा सहयुगीय सींग दुस्य हा का वेंदें।

ह्य प्रकार को महरोग सिनियों में मोदेर मर तथा परिवाह का दिल्या होना बाविया, बीर में दिल्यों हार्ड न रक्ष्मा योग से नार्ट, हे हाले बादिये। जिनमें बाहें भी भारमों हिम्मेहार देखि से बीवित संदक्ष मार्थे।

'सहकार चार्य सन्ती चात्र द्वांग चत्यों को याने में सिद्धे डित्तर। असरी है उत्तर हो बहु पूर्वी को स्वतिगत द्वांग में शेमने के सिद्धे को चारायक है । शहर मा सुनाता निसी पढ़ चारमी को देव में क बारह बुख नाव दर्शनयों को देव में अपनेश है







प्रभिद्ध तथा खामदायक थीं। मरकारी विरोपली को वर्ण्यांकाता तथा बेडव येंब देंदा करने बाबी शीति के कारण नष्ट प्रायः होगाई। दिसार के मरकारी छामें से जो मारत ही नहीं पृत्रीया महादीर भर में सबसे कहा मांद करता करने का स्थान है। दिसार तथा निकट हवाके की गायों की नसक हो लाम नहीं हानि ही पहुँची है। रोहतक जिले के रागु में को खाम नहीं हानि ही पहुँची है। रोहतक जिले के रागु में को खाम नहीं कानि ही पहँची में मिलार चार्म के सोही ही काला नहीं काला। रोहतक के जिल गायों के चारत करने से मांद खामें है कही के खोगों ने मराब होने के कारण हिमार चार्म से मांद जिये ही नहीं। यह यहां के पण्डा विरोपल दिल्ली मूंच सुधारत के तिये चित्र कुछ परेंदा करने वाली नसक बनाने का पल कर रहे हैं। पर यह सुधार कोण न होगा। पराम-मांव मांव में मांदा मांदी हों में स्थापी नौर पर बाम हुआ तो भी रसे डीक करने में बहु स्थास मांवी।



देने चीर चर्र्ड बहुदे बहुदी समय पर उत्पन्न हरने वाली पुराने खरने

हो गाणें हो उन्हें पूरी पूरी जांच हरहे करोदा आये। मांद भी पृती हो गाणें हारा उत्तव हिया हुआ हो। इन यहएं बद्दियों हो बावस्यक रूप दिलाया आये। नया अदित्य में नमस्य तैयार बरने ये लिये पूरी देख रेत ही जाते। जो लोग यहएं बहुदियों हो हम रूप विज्ञाने या उदस्य होने ही बद्धाहृतिह तरी के पर कलग बर देने हैं, यह पढ़ी के बसल सुपार हार्य हे लिये श्रीह नहीं। यनों में ही बावस्यक रूप मिलने से ही बद्धा गमल के सांद में उत्तव हुए बहुड़े करहे सांद तथा बद्धदियां क्या हुन देने बाबी तथा करही सांद पैदा करने वाली गाय होती हैं। यदि बद्ध हुन देने बाबी तथा करही सांद पदा कराने वाली गाय होती हैं। यदि

दूसरी में देश क्या नीमरी में दूसने के बरीब दा जाता है।

समज मुजार द्वारा नायों का क्य यह आये जो नायों की स्थायों वहनि मी हो डीती, दुख शावायों भी सामदायक स्थायार कर जायेगा। यनः सस्त्री नसल सथा क्य का रागाइन बहाना—कृत होनी रहियों से समज मुखार का यह तरीवा खामदायक होगा। मरकार पर भी दूसका प्रभाव परेगा। यह सरने नमल मुखार के कार्य की मूले टीट बहने पर स्थान देगी। सथा चायिक काम होगा।

ह्म नरीवे पर काम काने से, पहले पांच पर्य क्युमान से १०० रहये भाजाता आते गाय, हमरे पांच पर्य क्युमान से १० रचया अति गाय सक् में कमी रहेगी। इपये वर्ष के सात में बरावर नथा अधिप में वह श्यस मुवार का कार्य एक जाम रावह बचायार ही आयेगा। शमा मुवा जान से प्राची तथा महान जान पहुँचेगादी जिसका कार्या कहा

रोज्ञान को के प्रसासकान नक्षा प्रदेश कास धन पहिस्ते की हैं वर्ष इस इस्प्रेयका के सहिता को हैं। यन रोज्ञान में हुससे का सर्वास पारंग्याचन को सो यह क्षा कर सकेशी कार्य

मह-भूमि सेवा-कार्य हो बीदाखाएँ ही हमे चारक्य करें। सारत मरकार की भी, नमज सुधार तथा अधिक दूध उत्पन्न करने वाली गौशालाओं को दुल सहायता देने की सबरोज है। पर यदि भारत सरकार सहायता न भी दे ता भी गौराजकी को शोवंश की बारतविक उद्यति तथा रहा का यह काम करना चारिये।

800

चारा है गांशाबाओं के सचाबक शधा गांवंग की स्थायी बबति के विरे बारतदिक कार्य' करने वाले समान नसन्त शुधार के कार्य को करके स्वाची Min brigin : हरदेव सहाय, मध्यी गांवंशरिकती समा दिसार ।

मासिक 'दीवक' से

कैसी गायें खरीडें ?

मी चरत्री असल के सांव तथा गाय की बेटी हो, जो शक्ति तथा व्यक्ति दिनों तक वृथ देती हो, जो वक्त शहने की हो, जो स्थान से सीन महीने के चन्दर स्वाधिन हो आवे, त्रो एक सहीने से अधिक की क्वाई हुई न हो, को मारने थाखी यो नहीं हो धीर शानिन निव ही, जिसके बदके चरदे सांव की कोखाद हो, जो दूसरी या नीयरी बार की क्या है हुई हो, क्रिमका स्थीर रेशम जैमा मुखायम, स्वीत तथा मृत्रर हा, जियहे करी यन सक्षम सलम एक मां ही, क्षेत्रा महा हुया है। बरकता हुवा न हा पूज् संस्थी हा, कान वह तथा सन्दर हुव वीमा-यम किये हुए ही, माम बन्य हा । गाय सरीवन में पहल उता जिली ब्द ब्द बात की पूरी नमवंती की जावा दूस गाय का बद्द मार क्षांबर क जिये मैवार इ.गा । यम अब ब म च रही मरइ देख बर पर त स बरें के व बद्द बद्दी व की सब ई बर ही अप

गाय सरीहते समय भी वे लिगी बाली बा भी दशह विसा छे हेममे राय सरीही बावे उसका (१) काम (२) वसके दिया का काम रे) बाति (४) गाव (२) साथ सारीदर्व की तादोख सथा मिति (६) म मृत्य में सरोदी (०) पर की बहुदी भी या किभी दूसरें से मान ों यो सोछ सो दुई थी तो बढ़ने साहित का दना गोद साहि स) ताद ि हुद्धिया (६) रंग,यीत,बसर, दृ यु, श्रित्रत्ये बार बदाई है (१६) वहिसे पत्रों में बदहें दिये या बद्दियां। टनका सम्रतः सम्रतः वदीस हैं।

 चद किस सिन्दी या डारीस को स्पाई है ! यह गाय विद्ते ब्याने में दिनना तथा दिनने दिनों तह दुध देशी , मी हिन्द्रा था १ यह बहुत हिम समझ के मोह से पैदा हुया टम साद की पैदा की हुई बयुदियां कित्रता सथा कित्रते दिशों सक देशों है ! बदाने की होते हैं ! यह साम दिवासे क्वाजी में स्वार्थ से दिनने दिनने महोनी बाद न्यामन होती दहाँ हैं है विद्यूले क्यानी में व दिनसा इन्ता दिया साता रहा ! इस गाय की मी दिनता तथा ने दिन सब क्य देनी नहीं मिलून हो सके तो इसकी नानी है

न्य में भी यह सारी कानकारी हैं। यह गाय किस नसल के कोई से देश हुई। उस मांह की साय देयों क्षित्रता समा किनने दिन कुछ देनी हैं। इस गाद के साने दा बातों की बावत जो गुर दोन ही सब कान्यी तरह सब सच किसें।

• हरदेव सहाय मन्त्री गौदंग रहिए। समाहिमार

मिही की करामात

द्येत बंद इ. इ.स्टब्स इम स्थान पर ही इस मारीसिही ि बाब इस मा करण की अधन हुएना अपनी दवती हैं और बिद

१०२ का प्रभाव बृह हो जाता है। जब हुए स्थान पर शिही का खेर वहा धाराम पहुँचाना है।

कैयी ही चोट हो, सांस निहल चाया हो, यहां तक कि हड्डी दिया देती हो तो तम चोट पर भी मिट्टी चाराम वहुँवाती है और यात हो भीरे भीरे इस शरह भर देती है कि बारक्षा हो जाने पर असका बिग्द मी

नहीं रहता । तीम उत्तरी में पेंदू में मिड़ी का पळश्तर उत्तर के सेय को कम करते

में बड़ा सहायक होता है। करता लथा बांव का मिही की पट्टी पति या बारास पहुँचानी है। यब रोत में पेंडू बीर खानी पर मिड़ी का बेर बरने से बड़ी संहत मिलती है।

जिन्हें निर न्द्र की शिकायन बनी रहती हो वे वदि प्दे के समन माथे श्रीर पेड़ पर मिही का मधात करके देखे , बन्हें मिट्टी वा बार् गुण देख कर चरित हो आना पहेला । कैया ही करित बिर दर क्ये

म हो मिट्टी के उपचार से सबस्य शास्त्र हा तांबगा ।

अभिने के दूर में बिट्टो ऐसी शीतक और गण दायक सिद्ध होती है कि बसका श्वकार कर खेने पर शांखा में हालते वाकी दुशई की इन्तेमाञ्च करने का बनी जी नहीं चाइना । इसके सिवाय मिटी अंत्रकी,

हाद कुम्बी कादि वर्म शर्मी के लिये भी अवृत कीयथ. है।

मासर्गहर ' विश्वमित्र' स

रवास्थ्य रहा ये: गृल गुरुव

the factor of the factor of the factor of विश्वीय कोंट निराम्ह किया है। बर कि बाल बर कांचर ।

र काम विकास में इस में होता है है है कहा कर काहर कर क भारत विकार के बाहे. विविधा के में हैं या अप के किया है की दें हैं कि अप के the people for any people of the end of the Co.

I was the first material + PER Cafe. Co. became and and the man to the and one

the angle gray straight to be der disease. the period and every the plant of the second of

A RESTRICT FOR STATE OF STATE 16 16 1 \$ 8 E 18 \$ 18 E 1906 812 E 18 E 19 E 19

Compress & Consider to be the second to the second the first for a case of a service of the

िकेश करण हैं। इक्षा का कारण में एकेट हैं के कारण

man beggen fees at a me Eins

The state of the s tm + ti +-- .

१०४ मरु-भूमि सेवा-चार्य १०---मादक बलुची का भूक कर भी लेवन न कीविये । चार काफी, बोदी, सम्बद्ध, सराव कादि किसी भी बलु की जाइट क पार्टिस सी रोजनामचा सात्रसदक्क सारी से

घरेलू नुमखे

(१) फालीयाँ—(१) थोशा नगड टहे शानी में नियाकर विधा । (२) गाय के दूरी में बसाद का बानी मित्रा कर योद्या सेंचा नगड़, मुना और, शोगी कांधी मिर्च शांक कर विधा । दूरी योजे से फारीयें पूर दोगा । (६) सोंट, वीवर, विदायता और सेंचा नगड साम सामी के साथ लाखी । (४) सींयु के दस में केंग्रा चोंट कर वारों।

(२) अविसार—(1) माबयल बोसकर नानो पर खेव को (१) दवादिनार हा तो छवादर योग कर दूथ के साथ बाकी में यून , पत्ताओं। (३) रतनिवार में कुरैया के जह आधा तो ना योग कर महें के रोध मांको। (७) आमादिनार में आगयरक, लान, जीना और सुराग के ला पांका पूर्व समझ के साथ बाटोन

(३) अध्यक्षारी —(१) मुर्वादव से वह से ३ सा ४ दिन गाव हा दही स्वीर २ पत सामो । सिधी भी सिका सकते हो, स्वयत हात्री बजेंगे सामा सौर ड पंका सोरा विमो स्वयत रात मा स्रोप्त में रका हुया वर्ष दियो । (२) केन र कांग्री में गीसहर मुर्था।

(४) क्यास कानेपर—11) काथी सहीक मुजाबक्रम में दा स्वी रिट्डपी योग कर स्वष्ट मिला दा इसकी पालीन वृद्दे साल में शता। (४) सुद्ध सहस्त्र साल में साला (द) साल कहने के बहुँ नह सह तार के के बहुँ पूर्व में तर सा किर सायंक नह पर जार मी विट्डसी हुई। दा और कार्य को सोबों प्राप्तवा। अञ्चल व लाली हर हाती।



.

and defined the state of the st A 8 814 ल भर १४०० ता पत्र और ४२वी है।

the sea and and are a second of the first second granten and the second of the contract of 4 2 44-4 74 200 7 4 4 4 4 10 45 7 18 7 1 and gen me erant . I de ne me me er

a conjugación a gran fixo 4 8 5 m 4 13 . 44 . 19 . 1 1 may 110 1 19 # Max.
 A max.
 A

. fra | 10 14 1.91 1 1.01 1 1 1 1 1 1

-----. * 157 # fer en 4 1 1 4 . 45 41 41 57 4 5 7

11 1 1 1

रे—धर की हवा उद्देशकों का विरोध ध्यान स्थान वार्त हरत मानामें, कहर इन्हों, चन्द्रत चूरा, नागरमोधा, धृतस्वरीका, हिनादक, मूलक, बिरायना, मंग्र के दसे, जिल्लेय, बाल बस्ट्रन पृत्ते में बातु गुढ़ हो जाती है। इस में इस पूर क्ली, प्रवत्त गम्ध सारात का गूरह तो रोजना का एक दिन के पानर से जलाते ह रहता पाहिने ।

र-प्रांड, बनी चीर रेटमी करहीं ही विरोध सावधानी स्वनी मिहिए। दरवारा के बाद काहें बच्छी नाह बाफ कर दिखानन से रख देश बाहरे। ब्यू, नेटस्योन, बन्दन का दुशन्, मोहर की सहक्षेत्र तिमी हुई बोल हिल्हों का वृद्ध , दोनामाधा की दर्जा, कवी मिर्च का हुए , नीम की दुनी कादि तीम गुरुष के दुनायों में कोई नहीं लगते। मध्द बनहें को योगी बैकियों में इनमें में के हैं कीच मह देनी साहिए। ीर काहें बनहीं की तहीं में दूधा देना चाहिते। घालमाहिती चीर नुष्ये में मोतर कीर बाहर ताथाह का बाहा करा कर गृह पत देने से हम बस दोता है। बहुर का बहे मां कोई गए करते की बाछी है। इसके चलावा करहाँ की मनद मनद दर पूर की क्या

६--- हरहे पर बोहे हे घारे बग गरे ही नो मीर् हे स्म में नमह त्वा दर महना काहिते। बाद बहते के हात सुदाते के राही में, मूर्त हैं। जन निर्दे में, बारीह बरहों में छने धान हे हता बहिना हैत की बेरिड पाटक में कालें ताह ताह हर कर जिला काई न राज्ये में कहा मुक्तन से विति म हता कमानिया की नाम में हुन है न है कर रहे जहां है कहें है के हैं है मुखे दस नह हैं हे क्या है है दस्तार हम हम हम हम हम साम एसे ही महत्व हो नव कराव । सामा हव करावा हें द हमा दे हैं। वा वा दार हर है है में में ह

मर-भूमि सेवा-कार्य सुबा नमक मलने से, कन्वल पर के तेल के दाग दही से उती धररे के दाग गम पानी में नींबू का चर्क डाल कर शावने और धूर में मुलाने

५-पुरतको और कागङ्ग वत्री का सुकी, गरम और हवादार अगई में रखना चाहिए। चालमारी में से पुरतके निकास हर समय समय पर भाकते रहना चाहिने कीहीं से बचाव के लिये पुस्तकों पर फिटक्री चौर सकेर मिच की बुढती बुरक देनी चाहिए । बालमारियों में कोड़े खरा गरे हों तो जाल की बानिया करा देनी चाहिए। स्थाने पीने के वर्तनों की सफाई की बार विशेष स्वान देना

8:6

से साफ हो अपने हैं।

चाडिए। चादी के बतंत गर्म वाती में थोकर मुखा खेता चाहिते। किर साफ चूने का लेप कर दे। अथ मूख आय तो पलाबीन के करने से पींख काले । नकाशी हो तो कूची से भाफ करना चाहिए । चालु के शबी में डाउने से भी चांदी के बनेन शाफ डा जाने हैं। कुल के बतेन गीसी दाल से मान कर पील देने चाहिएँ। पीनज के दर्नन वाल झीर दात से साफ हो जाते हैं। यदि धरवे पह गये हों तो नीयू के दिलकी को नमक के साथ सकता चाहिए। ताबे के बतंत भी इसी प्रशार लाफ करते रहता चाहिए | भीतर बहुत मैस अस गई हो तो काथ सेर धानी में प्र सन्त्रम वाशिम सोडा डाख कर उवाल देशा चडिए। सिरके मैं भौडा

व शिग सोडा या जुना मिला कर अस्ते के बर्गन साफ करन चाहिए कोंडे के बर्तन राम्त भीर बालु से साफ इा सकते हैं। जग से बचाने के लिए उन पर भूना पांत रमाता चाहिए। बाहिटयों चादि की खिडनाइड सौजते पानो में सांडा डाज कर वान से माफ ठातो है। बालमीनियम के बतेन नीयू के रस में भिगी कर उपने के द्वार मल कर गरम वानी से भी द्वालने चाहिएँ। लदिक सीर मानी क पन से घन का कार से दाधर के बलकी पर सगदनः च दियु किर वर्णस अवस्त अरह अरह साली

से बर्लने के वीक देन चाहिया।



मर-भूमि सेवा-कार्य 12. म---गांदी में यदि लामाने छुट जाये तो चगले स्टेशन के स्टेशन म स्टर को तार देना चाहिए। सावारमी मामान स्टेशन पर दी दिन रमा जाने पर कम के बाद बड़े स्टेशन पर क्षेत्र दिया जाना है। चीर बाद में नीकाम कर दिया जाता है। यामंत्र या गृह्य का सक्ष्यूत्र क्षेत्रने वाद्धा श्राहे तो दहत्रे मी दे महता है और पीछे भी। अवदी विगवने वाळी चीत्रों का सहन्त पहलें ही से किया आता है। मास की विदरी दिन्याने पर मास मिश्रण है। बसके की जान पर (॥) के साम्य पर इक्सस्वामा क्रिया Rimt & 1 माप नौल की मुची कपड़े का माप 4 बंद की 1 वबंदी ⊏तीया पीन ईचका १ क्षेत्रक = पनेशे का १९ मन इ क्षेत्रया शहब वा 3 विश्व २१ लाखे वा (१ सेर (महावी) स्तिग्द्रका १६ द्व का १ द्वाव ३६ तांके का १ त्यम (कार्ब) श्रंपेषी भिका २ इत्य बा ३६ इच का एक गञ १२ ईय का एक पूर थ कादि ह की 1 वेबी [-]] १२ पनो का एक शिक्षिण [बन्]? su de at 15 En at 1 Rich

२० विस्तित १ पाउड (१३१८)

समेरिका — 1 शाबा = 100 वट

RIT # -- 1 TR = 100 HR -

facen fage

» शिक्षित 4 =3 करीय !

(i) 604 의업 --) 기독도 255 위기대

-11 88 4 1

के मुद्र का केई हुए का कराव

ध उस

रे इर्राक्ष चा ३० न स्व कात प्रव

(द नका)

१ रुपये बर का १ लोका

र संची का १ सर्वक

2 . N'E EI V& T 4

क्षात्र का साथ सर प्रमुख्या र साथ सरका । यह e'dim 111

1414 07 41 1 12

enere. राक्षेत्र का देशी साव THE med Bie gon E're. इ.काल्स के ५ शीर : top wite ! हे श्रीत का श्रेक श्रेष

Thirt up. signs at an ag

MERRY ERM Com 120 41 7 4192 11 6 8 8 1 9 6 2

te tien en engie en ene is talk 1 *ti+ #" 13t @E # 1 er. 1.9

t'eier fron errorma der arrober settig: (g'er) e neeeres - i e'er tete ,.

Atre Cem De C4 5 --- 1 # 5 ... 1610 ...

401.45 Mar 25 (1 1) but

matte fin र राय सारा ४ ६ इ.च. चौदाज धारेती घोष देशी बतन 24 8128 49 18 19 fin er

Tid - star - see dern

ite fer ing at tij ror's eines fre et

भागामा का एक कारत

Patrice of the re Ver to so me

सभी का संविद्धा गाव 178 154

.....

6 32 8 98 63

2 47 21 4

क्ष्यां (क्याओं)

Pilla et gig

me er ate af gr et

Fe # .F. d. 355e Ed & : #1

्रे. चेथ का १ एक्€ळ

(128- 49 02)

१ . . ६ १ १ वर्ग में स

.

मह-भूमि सेवा-कार्य

k--गाड़ी में यदि मामान सूड कावे सी खासी शरेशन के स्टेडन म स्टर का तार देना चाहिए । लावातमी मामान स्टेशन पर दो दिव रुमा जाने पर असके बाद बने तर राज पर भेज दिया माना है। बीर का

में भीकाम कर किया भाषा है।

??-

र---वार्यण या गुष्टम का महसूच शेवने वाक्षा चाहे तो १वर्ष थी दे मध्या है श्रीर वोले श्री । अवशी बिगवन बाबी श्रीमी का अर्थ प्रदेश ही से जिया जाता है। बाल की दिवरी दिखाने पर मास विकर

है। बलक मा जान पर शाहु क साम्य पर दुवरारबामा बिल्डन Kint & I

क्षत्रं का माण

1 - 54 41 44 4.

माप मील को गयी

्त्रीता दीन हेच का उद्योग्छ s wife at a gar at a free

c 'nre 41 16 44 61 1 814 · 5'* 41 35 24 41 44 0'X

क कालिक की वर्तन [-]] 19 Tt 41 3 + 24 41 3 gru 1 94 4" 14 54 41 1 HH

se and er es tettan [#9] 20 fallen 1 arts (117) विदेशी विका

s at al g dan

द वयेती था १९ मन २४ मोओ बार्डिय सेर (महामी) देव मोले बा ४ श्राच (बावरे)

##fes -1 #### 100 €

चॅबेबी निका

· In un sajafal

* 7 4 -1 14 = 100 A41

*/ * 414 1 184 1 Fee ATT

.

1 414 41 4 1 4 4

1 4 4 41 4"E

र्रतः-। क्रिए=१०० सेंटेमस ==}। स्रीयः। वर्मनी:- १ मार्क = १०० पेनिस = १ नाध हरीय । श्रॅयेडी वडन १६ दाम का १ कीस १६ घीस का १ पीड रेम पींड का १ क्वार र ४ स्था॰ या ११२ पीड का १ हंदरवेट (Cmt) २० इंडावेट (इंडर) का 1 टन =२२४० पाँड= सन रगिर्गाटर म्युविक इंच (Cu. in.) यानी =२४२॥ ग्रेन अँमेजो और देशी वजन १८० प्रेन= १ तीला प्रायः २॥) ते से हा । श्रीस ३१ ताले का ı çış सर श्री= ।। दा पुर स्वाट र नेते १ र्थाना हा १ हंडर =र पींड की १९ मन राले का अप्रेजी माप १ दैसः = १ इच १२ इत इत १ प्रदुट रे कुट का एक गञ

रेरे॰ गत्र का एक फर्का कर

१७६० राज का १ मील रास्ते का देशी माप ४ घंतुल की १ मुष्टि ६ मुख्टि का एक हाथ ४ द्वाय का एक धनु २००० धनु का १ कास वीघा युक्तः प्रान्तः—। बीघा = ३०२५ គល់ សភ रहालीः—१ शेषा = १६०० गज वायेया:-- १ बीबा = ३१३० मद्रासी:- १ बीघा = ६४०० । वआबी-1 बीचा= १६२० जमीन का माप र हाथ लग्दा x ४ हाथ चौड़ा= ११ वर्ग क्रर का एक द्वराक 1६ हराइ या ०२० वर्ग कुर हा 1 42 21 1 २० व्हा या १४४० वर्ग पुर का । योषा (बहाली) े, बोध का १ एक्इ= (६=४० वर्ग गत) ६.० एक्ड का १ वर्ग मीख सनय ्रें ६० शतुरस का विक्र

६० विश्व का १ पत्र

६० संकार का एक !

३० श्रीम का एक विंड 4 • वस या २४ मिनड की 3 वर्षी २० विंड का एक क्वार रेग वदी का १ मण्डा का प्रदी या दे यह का 5 पहर ध क्यार का १ गैयन E 444 41 44 41-5 41 5 1 मेशन = 10 die = [41]

मह भूमि सेवा-कार्य

होर करोब

स बात की 1 रूपी

द्ध क्षेत्र के अध्या

दिव सम अदिन का अध्यस 4 SRIE 41 1 72 न पण का 3 सहीता

535

se ngle er ne mu 12 44 61 98 94 १०० वर की वृक्ष शत तती द्रावसी यान

P+ 23 41 1 FE 14 3 PK 7W #1 5 WIR E # # # # # # # 1 + e'a ut 1 ele

*** 8 += 1 11'4 130; " = 1 WA 3, ., = 1 4/75 **! * - 3 4'E

दुव दुर्ग्या व व रस

1 FE * F# 41 , 5 8"

21 - 12 2 2 6 6 15° A

** # .-- ** *** A11 . - 41 44 4. 07/ 1174-11 मन का मन

248 "-10×45 #TE4--- 14 40 EX2 -1: 10 fen'f-22 35 #/fram-1= +3

धेन ह बजन १२ मधी का १ तेला पागत का भाग इंथी में 77427-1411 4 10 44

सेवा के लिये प्रेरित करने वाले आंकड़े

शिज्ञा

नाम देश प्रतिशत शिव्ति प्रति विद्यार्थी पीहे सर्च हेन मार्फ 100 10) धमेरिका ₹₹ 151) इंडलंड *=) . .

ञापान £ 5 भारतवर्ष Ξ वार्षिक झाव

नाम देश प्रति स्वक्ति समेरिका 1050)

चार्ट्रेलिया =20) प्रदेन (34) प्रांस 840)

भारत 84) भृमि की उपज

नाम देश प्रति एकड षास् सिय ११२ मन गेहें % ने क् رد دی

370 et n 86 ₹\$ 31 भा∢त

` 1= "

मह-भूमि सेवा कार्य 214 गायों का दध प्रति वर्ग भील प्रति दिन नाम देश भारत श्रं १ सन ३ सेर हार्लेड 20 ,, 15 ,, <u>के</u> बचाई 44 ., 44 ,. दुर्ध्यमनों पर सार्च नम्बाकु - १६६६ १०००) प्रति वर्ष विदेश से भाग-ना ता-शराय-१६६६१०००) प्रति वर्ष विदेश से 917 -च्यामन स्याक মনি ফাল্ডি नाम देश दर्भग क्ट हरांक 11 न्युडी लैंड 3 oll .. ** <u>स्विट्यापेड</u> 2 mm .. चार्ट्स देववा **उ**ठवेश क्रांग्रेश का 1 24 . भारत सव तरह के द्वास के ये बाकड़े प्रत्येक देश प्रेमी के हर्द स सेवा भावनाय पैता किये बरीर रह नहीं सकते । इस विदे ही भी । अस म ति मुल्य का ब्रेच करान के सियं कर सकते ही है। कर यनवान मार राज रहर जन में या दारा और होते में ग

gare our se time a . a c se

2.21,52,222

₹₹,₹=,0=,0₹₹

8.88.81 E1.

६,०२,०६,२१*२ २,*२०,२०,६१०

1,57,15,518

1,48,4+.181 1,45,18 t=v

** **,5 ** \$ \$* \$=.* {*

E 5,3 E, 5 % %

24,34,00.

,=*,*=

और जब हम मह-भूमि की दशा का अवलोकन करते हैं तो यह ह्वाबा नो रोप भारत से भी पहुत पीछे हैं और निरा हुआ है। इमित्रचे इसके उरवान की ओर विशेष प्रयत्न किया जाना और पान देना अरुरी है। इसी आधार 'पर हम प्रत्येक सहदय रेस वासी से हमारी योजना के म्वागत और सहायता की भरपूर करता करते हैं।

करा करते हैं।		e agran in refe		
भारत की जन गण्ना १६४१				
भारत (हुन्त)		\$5,03,03==\$		
	नगरों में	8,68,88,022		
	देहातों में	12 42,01,407		
	पुरुष	₹ •.5•,₹₹, ७ ₹६		
	76	1=,38 02,228		

देशी रिवामते

सदास भारत

दद्राम दान्त

युष्ट प्राप्त प्रधाद प्राप्त

बिहार प्राप्त

after total

77'61 T- 1

t-41 7 4

भारत जन्म

থিমির মালা (হুল)

मध्यान्त्र और दगर बामाम राज्य

**	मर-मूमि सेशकार्य	
अजमेर मेरवाहा बा	A1	. 4,=1 117
धग्हमान नीकोबार		21,050
विलोचिस्तानः	,	2,09,581
दुर्ग प्रान्त		7,42.331
दिन्ली प्रान्तः		4,20,121
पन्थपिपलोदर		٠,२٩٠
	ञातियाँ	1
हिन्दू		~ **,**,** ***
दिलित धर्म		Y, EE, 18, 1=1
गुम लमान		1,20,25,021
ई साई		42,24,224
सिक्त		24,47,273
र्जन		\$4,84,825
पारसी		1,14,54
षाँद		7,27,002
जरायम पेसा		4,44,41,5
धन्य		A . 4 . 2 . 3 .
युक्तभान्त		*,**,**,*19
हिन्दू पुरुष		******
म्बिया		6.2=.05,000
मुसलमान पुरुष		88,58,585
स्त्रिया		\$4,54,+4+
जरायम पेशा पुरुष स्थिया		1,44,455
भन्य पुरुष		121,419
जन्य पुरुष शिया		4,04,414
		364558

परिशिष्ट

चागरा मन्त मेरठ हिबीजन श्रागरा दिवीजन महेलवरह डिवीवन रलाहायाद हिवीजन नांमी हिबीजन ्र,कमायृं डिबीजन यनारम हिबोजन गोरत्रपुर हिवीजन चवध प्रान्त लवनङ हिबीजन फैजाबाद हिबीजन दनार्स डिबीजन दन:रम निज्ञांपुर जीनपुर गाङीपुर दक्तिया गौरसपुर हिबीजन गीरवपुर दर्भें? <u> इतिमाद</u> दनरम राज्य

3,04,08,920 20,24,823 -४३,२६,७६≍ **६१,६४,**६६६ €0,98,=93 **૨**૨,५३,४६२ ११ =१,२६२ 44,84,740 08,32,90= 181,18800 ६६,३०.६२३ ७४,⊏३,४३२ £2,82,220 १२,१८,६२६ 395.32 \$\$,=0,838 きっことっきこの ५० ५३,८८० 201726,90 ¥05,52,50¥

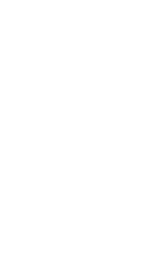
29,52,683

* = 2 2 , = E 3

28

वताल नगर

क्यक्ता अन्दर्दे





मह-भूमि सेवा-कार्य

१२०

पुकारा जाता है। यनवाया था श्रीर साथ ही नवीन भयनों के निर्माणाय ४४००) दिये थे। ध्याप ही के आरंभिक दान से आर्यसमाज श्रीगंगा नगर का हाल बन रहा है। उसी प्रकार थार्य कुमार आधम (जिसे जाट छात्रावाम के नाम से पुकारा

जाता है) जो अपने सम्बन्धी परशास जी सूनिया के साथ २०००) का दान दिया है। आप का यंश प्रारम्भ से ही समाज सुधार और आर्यसमाज का कट्टर पत्तपाती एवं प्रेमी रहा है। त्यान की मृमि (सम्पत्ति- जायदाद) उहांग और चक्रक

नत्यु द्वारा (ढाका वाली काट रियामत भावलपुर) नया रूप-नगर जिला फिरोजपुर में है। चार धवने गाव के साथ साथ गंगानगर राज्य भी बीकानेर

में रिपुरमन निवास नामक भवन में वर्तमान समय में रहते हैं। जिस प्रकार उक्त विद्यालय से चाप का सम्बन्ध सर्वेच प्रारम्भ से ही चना या रहा है. चीर समय समय पर खायस्य-कतामुसार आप का और आप के यंशजों का दान भी चला आ

रहा है ठीक उसी प्रकार सरुभूमि शिन्ना प्रमार कार्य की योजना को सपट्ट श्रीर मरल बनाने वाली इस मरुभूमि सेवा कार्य" नाम की पुत्रक को छपयाने से जो आर्थिक सहायना आप ने

दी है। यह आप के सारिक दान का प्रस्त परिचय है। जहा यह दान इस कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक हागा वहीं पर महभूमि नियासियों के दिल में आप के प्रति स्रमर भावना की पैदा करेगा। यह मुनिश्चित है।

देशवानन्द्-जन्माग्टमी २००२

पृथ्यो

पृथ्वी गोल है । पृथ्वी का ब्यास- वियुवत रेखा पर ७९२६॥ मील है। बार प्रुवॉ पर ७९०० मील है। पृथ्वी का बुल जेव-फत १९४४ ४०,००० वर्ग मोल है। जिसमें ४,७०,००,००० वर्ग मील है। होर १४,०४४०,००० वर्ग मील नमुद्र है। पृथ्वी के यत भाग के । हिस्से में कशिया महाद्वीप हैं। स्तीर १ २४

क्या-वैद्यानिको ने सोज वरके बननाया है कि १ हजार षोन्स पूरेनियम बातु में १० करोड़ वर्ष में १० छोन्स प्रेनियम सीया क्ष्म जाता है। पुरामी लक्ष्मों में जो सूरेनियम श्रीर इनते बना शहरा निजते हैं। शैनों दी नाव नौज से वैज्ञानिकों ने मार्म किया है कि पृथ्वी को भेड़ा हुये एक सरव ४० करोड़

बद्धाः — पृथ्यो का बद्धान ६० करोड फरव टन हैं। तथा यह

चूर्व से ९ क्रोड़ २७ ताम मील दूर है।

पान-पृथ्वी को नान सबसे प्राधिक वेज पहले वाली रमाना से में हिन्दू भी तुना अधिक है। मान भर में यह सूर्व के इहानिई ६० करोड़ का चक्कर लगावी है। सौर-म्एइस्

मूर्व पृथ्वी से ९ करोड़ २५ तान सेन दूर है और वह खिल है हिनार १ मी ३२ तुना दढ़ा है। १०० मील ति पंडा प्रकृते बाला हवाई जहाज पूरवी से चले तो १०४ वर्ष

पत्रिमा प्रदर्भ से र लाख ३० हजार प्रोस हुए हैं। प्रदेश के इसीरें क्षेत्र रेसा। मील प्रति से हें हैं अपने से

१२४ मर-भूमि सेवा-कार्य भारतीय व्यवस्थापक सभा (केन्द्रिय-क्रसेन्ट्रक्की) के सेन्बरों की सरवा १४३ है। इसमें ४० तो नामजन और बाकी चुने जाते हैं। इस सभा की श्रायु ३ वर्ष होती है और इसके वोटरों की

संख्या नन् १९३० के निर्वाचन मे १०३२, ७७२ थी।
हाय की कनाई चुनाई
मारे हिन्दुनना में छुल ४ छारव शत्र कराई की सालाना रापन है। इनमें से २४ फीनटी छार्यन १ छारव २४ करीई गत्र चार्य में कार्य मुन का हात्र की व्यक्ति निर्याद करती है.

३४ कीमडी विदेश से जाता है और शेष ४० कीमडी हिन्दुस्तानी

मिले सैयार करती है। हाल में मैयार होने बाने कपई में कम कस २० लाय जुनाहा और कई लाय कांनतों की भीवन क्या मिलता है, वर्षाक हिन्दुनानी सिने केवन २ लाय ०० हवार ही मतरूरों का कार की है। यह ना ख़, भाव वर्षासप प्रनिवर्ष ३६ लास का साडी सेवान करना है खोर राग मार्थ कांनतों ब १० हवार जुनाहों के सा देकर ६ लाय करवा करा करने कर प्रा लाय क्या बुनाई में प्रति न वर्ष देना है। यह स्व करवा

चर्खें ब हाय की राष्ट्री से नैयार होने लगे तो कई करोड भारत-

जम्म टलर अप्रज्ञ कहता इ.क. तह यो प्रचार के सर्वाहर के सर्वाहर ११ गज्ञ लम्बा एक गज्ञ चीडा कवड़ा इनना महीन बनाने थे कि जिसका यजन (५ सी घेत / ४८१३) चार क्यांन

बनात थे। कि जिसका बजत (१ मा पत्र ८४३) १ पार ४५०० ४००० हातीथी। लेकिन बाज कन क बद से बद कारणानी म इस बार्चका अच्छे से बच्छा स्वदा १ पत्र । यो पत्र । ताले बचन ब १२५) में ब्रिविक मुख्य का नहीं है (त)। हरिपुत गुजरात में हुई कंप्रेम प्रदर्शिनी में एक ऐमा शाल बाबा या डो बंगुठी में से निकल सकता है।

खादी—सादी पहनना भारत के गांव में गहने पाली चिति होंछ, मूद्धी कियों के पेट में भन्न पहुँचाना है। कारण उनके जीवन का एक मात्र सहारा खादी है। खादी अस्पेक धर्म प्राण् व्यक्ति के लिये कल्पन्त शुद्ध और पवित्र बन्न हैं, क्योंकि प्रायः सभी प्रश्तर के पने हुये मिलों में के बन्नों में वर्षा लगती है।

पर्न-एस और देश-सेना तथा लोक मेवा की इप्टि से भारतवासी मात्र का यह एकान्त कर्ताव्य है कि स्वादी के क्षति-रिक्त वे क्षन्य किसी वस्त्र का उपयोग न करें।

'दीपक" हायरी से



